ॐ नमः श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

चमन योग यात्रायें

(लेखक के सद्गुरु श्री चमन लाल कपूर जी के संग अनुभव)

लेखक : टी. एस. मेहता

प्रकाशक :

योग साधन आश्रम

3 एल, माडल टाऊन, होशियारपुर।

दूरभाष : 01882-225223

ॐ नमः श्री रामलाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

चमन योग यात्रायें

(लेखक के सद्गुरु श्री चमन लाल कपूर जी के संग अनुभव)

लेखक

टी. एस. मेहता

प्रकाशक :

योग साधन आश्रम

3 एल, माडल टाऊन, होशियारपुर।

दूरभाष : 01882-225223

प्रथम बार 1000

योगेश्वर रामलालाब्द 118

विक्रम संवत 2063

ईस्वी सन् 2006

भेंट : 25/- रुपये

नास्ति् योगात परम् बलम्

अर्थात्

योग से बढ़ कर कोई शक्ति नहीं है।
इसलिये हे जीव आत्मा तू।

''हठ योग से शरीर को स्वस्थ रखता हुआ,
राज योग से मन को शुद्ध करता हुआ,
योग से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करता हुआ,
सद्गुरु की कृपा से मोक्ष को प्राप्त हो।''

इक माता एक पिता, और गुरु भी एक।
ऐसे ही इक इष्ट हो, कहे संत प्रत्येक॥

योग वन्दना

योग - विद्यां नमाम्यहम्

सौंदर्यलहरीरूपां, तापत्रयविनाशनीम् ।
तेजस्विनीं तपोरूपां, योगविद्यां नमाम्यहम् ॥१॥
संस्थापकां समत्वं तां, शक्तिसर्जनकारिणीम् ।
चित्तवृत्तिनिरोधाय, योगविद्यां नमाम्यहम् ॥२॥
अर्धनारीश्वरस्येमां, चैतन्यसार संभवाम् ।
पूर्णरूपकुण्डलिनीं, योगविद्यां नमाम्यहम् ॥३॥

☆☆☆☆☆

✣ योग तुझे नमस्कार ✣

सुन्दर करे जो देह को, करे दुखों से पार।
तेज रूप तप रूप जो, योग तुझे नमस्कार ॥१॥
करे समत्व दान जो, शक्ति सिरजनहार।
चित्तवृत्ति निरोधहित, योग तुझे नमस्कार॥२॥
आदिनाथ से ऊपजा, चेतनता का सार।
जागृत कुण्डली जो करे, योग तुझे नमस्कार॥३॥
राम लाल जिस का किया, कलियुग में उद्धार।
मुलखराज के "सेवक", का तुझे नमस्कार॥४॥

चमन लाल कपूर "सेवक"

विषय सूची

1.	लेखक परिचय	1
2.	1993 ई० की यात्रायें	7
3.	1994 ई० की यात्रायें	14
4.	1995 ई० की यात्रायें	33
5.	1996 ई० की यात्रायें	42
6.	1997 ई० की यात्रायें	55
7.	1998 ई० की यात्रायें	61
8.	1999 ई० की यात्रायें	66
9.	कैसट	72
10.	सवाई ग्राम (एत्मादपुर)	75
11.	प्रभु चित्र की कृपा	79
12.	सद्गुरु जी की चेतावनी	81
13.	प्रभु भक्तों के संग सदा रहते हैं	83
14.	सेवा	84

प्राक्कथन

सद्गुरु जी सन् 1941 से प्रभु जी की योग विद्या का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। लेखक को सद्गुरु जी के पास सन् 1993 ई० में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने देखा कि सद्गुरु जी वर्ष में लगभग दो महीने योग प्रचार के लिये गांव-गांव व कई शहरों में जाते हैं। व्यवस्था के अनुसार सद्गुरु जी योग प्रचार के लिए कई बार विदेश भी गये। सद्गुरु जी उस गांव में भी गये जहां यात्रा के लिये पर्याप्त बस सेवा भी नहीं थी। सद्गुरु जी की अपार कृपा हुई कि मुझे सद्गुरु जी के साथ कार में योग प्रचार के लिये जाने का सुअवसर मिला।

सन् 1993 ई० से सन् 1999 ई० तक सद्गुरु जी के साथ योग प्रचार के लिये जाने का अवसर मिला। मैंने सद्गुरु जी व गुरुमाता जी के साथ यात्राओं के समय सद्गुरु जी की कृपा व प्रभु भक्तों के कुछ अनुभव स्मरण कर के लिपि बद्ध करने का प्रयत्न किया है। मेरी सद्गुरु जी के साथ यह यात्रायें नहीं एक अलौकिक यात्रायें थी। जब कार में सद्गुरु जी के साथ सफर

सफर करता तो सद्गुरु जी से सैंकड़ों प्रश्न पूछता तथा सद्गुरु जी एक-एक प्रश्न का विस्तार से उत्तर देते। मुझे ऐसा अनुभव होता कि सद्गुरु जी ज्ञान की वर्षा कर रहे हैं। यह सब सुन कर मन गद्-गद् हो जाता। आज भी जब मैं वह क्षण याद करता हूं तो मन खुशी से रोमांचित हो जाता है। उन्हीं यात्राओं व अन्य अनुभवों का यहां वर्णन कर रहा हूं। मुझे आशा है कि जिज्ञासु जन पढ़ कर इससे लाभ उठायेंगे।

ॐ

समर्पण

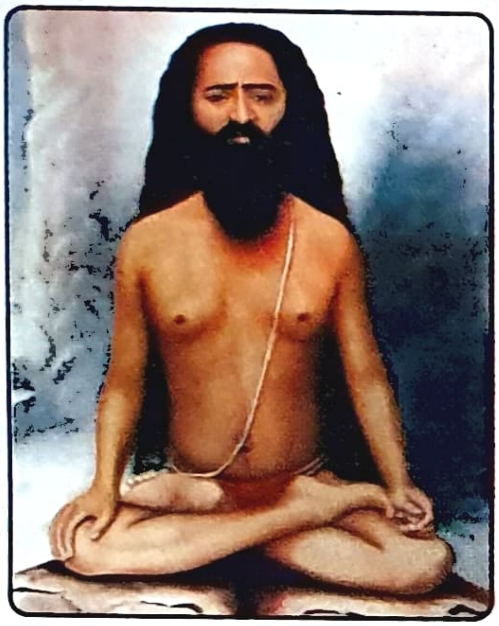

श्री प्रभु राम लाल जी महाराज

श्री स्वामी मुलखराज जी महाराज

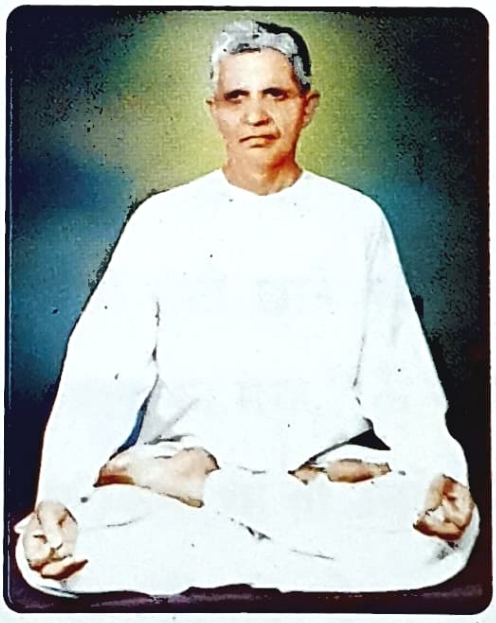

सद्गुरुदेव श्री चमन लाल कपूर जी

समर्पित उन के चरणों में, जिन की है यह जीवन गाथा।
राम मुलख भगवान की चरणि, टेकत सेवक 'चमन' है माथा।।

लेखक परिचय

लेखक का कैमिकल का कारोबार है तथा इस से पहले रबड़ कैमिकल की दो फैक्ट्रियां थी। मेरा अधिक समय कार में सफर में ही व्यतीत होता था। उन दिनों कारोबार कुछ ढीला चल रहा था। कारोबार के सिलसिले में उन्हीं दिनों मैं कई ज्योतिषियों तथा सन्तों से मिला परन्तु आर्थिक लाभ नहीं हुआ। इन्हीं दिनों मुझे एक और ज्योतिषी के पास जाने का मौका मिला जो कुछ छोटी मोटी ऋद्धि भी जानता था। वह अपने आप को लाल किताब के माहिर ज्योतिषी बताते थे। मैंने उनसे कारोबार के बारे में पूछा। परन्तु कारोबार में कोई लाभ नहीं हुआ। उन्होंने मुझे अपने जीवन काल की एक घटना बताई कि जब उन पर मुसीबत आई थी तो घर में रोटी खाने को भी नसीब नहीं थी। तब उन्होंने नारायण भगवान् का मन्त्र ''ऊँ नमो नारायण आये'' का जाप एक करोड़ बार किया था तो उनके आर्थिक संकट दूर हो गये थे और उनकी ध्यान स्थिति भी अच्छी हो गई थी। फिर मुझे वह एक मज़ार पर ले गये। जहां पर एक सन्त रहते थे। मैं उनके साथ लगभग दो वर्ष तक हर वीरवार को उस मज़ार पर जाता रहा। इन्हीं दिनों मेरे मन में आया कि क्यों ना मैं भी

भगवान नारायण का एक करोड़ मन्त्र का जाप करूं। मैं उस ज्योतिषी से पूछ कर मन्त्र के साथ ध्यान में प्रति दिन बैठने लगा। कुछ ही दिनों में मैं आराम से एक से दो घण्टे तक प्रतिदिन सुबह ध्यान करने लगा। मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि भगवान मुझे अभी दर्शन देने वाले हैं। मेरा शरीर सुन्न हो जाता और मुझे समय का आभास भी न रहता। अब स्थिति यह थी कि मन्त्र सुबह-शाम अपने आप मेरे अन्दर चलने लगा और मैंने लगभग 39 से 40 लाख बार मन्त्र का जाप किया। इस का फल मुझे मिला और मैंने मांस तथा मदिरा का सेवन त्याग दिया। ध्यान से मेरी प्राण नाड़ियों (Nervous System) पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। जिस से मुझ में कमजोरी आने लगी और मेरा वज़न भी कम होने लगा। मैंने उन (ज्योतिषी) से कई बार इस का कारण पूछा तो वह सही तरह से नहीं बता पाये। मैं उनकी सेवा में हर महीने शराब की एक पेटी देता था। वह मदिरा तथा मांस का सेवन करते थे। जब से मैंने मांस व मदिरा को त्यागा तो मैंने उन को यह भेंट देनी बन्द कर दी।

अब मेरे ध्यान लगाने की लगन अधिक बढ़ गई, वैराग्य की भावना भी बढ़ती गई। परन्तु मन दिन प्रति दिन अशांत रहने लगा। मुझे रात को नींद न आती तथा मैं दिन में कई बार अपने

आप रोता रहता। मुझे खुद नहीं समझ आ रहा था कि मैं किस की तलाश में रो रहा हूं।

एक दिन मेरी पत्नी की सहेली श्रीमती नीरू सरीन होशियारपुर में मिली और भक्ति की बातें चल पड़ी तो उसने मुझे कहा कि आप मेरे सद्गुरु श्री चमन लाल जी से मिलें। उस ने आगे कहा कि मेरे सद्गुरु जी को देखते ही कई भक्तों की ध्यान समाधि तुरन्त लग जाती है। आप उन्हें जरूर मिलें।

14 मार्च सन् 1993 को मैं नीरू जी के साथ शाम को सद्गुरु जी के पास आश्रम आया। सद्गुरु जी को मैंने प्रणाम किया और सद्गुरु जी ने मुझसे पूछा कैसे आना हुआ। मैंने उनसे कहा मैं ध्यान लगाने की कोशिश करता हूं। परन्तु ध्यान नहीं लगता। सद्गुरु जी ने कहा कैसे बैठ के ध्यान लगाते हो, करके दिखाओ। मैंने करके दिखाया तो सद्गुरु जी ने कहा ठीक है आश्रम आया करो, प्रभु जी का यहां वास है। मैं अनमने मन से अच्छा कह कर आ गया। परन्तु उसी दिन रात को मैंने आरती पूजा की और हर रोज की तरह ध्यान में बैठ गया। कुछ समय पश्चात् मेरे शरीर के बायें भाग की नाड़ियों में अधिक गति आ गई। शरीर का बायां भाग एक दम से ठंडा तथा दांया भाग गर्म था। परन्तु शरीर के बायें भाग में नाड़ियां सिर से पांव तक

अधिक तेज कम्पन कर रही थी। जिस कारण मुझे घबराहट हो रही थी। मैं समझ गया कि ध्यान लगाते समय कुछ नाड़ियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जो मुझे समझ में नहीं आ रहा था। जिन से पूछ कर मैं ध्यान लगाता था मैंने उन को तुरन्त फोन किया। परन्तु कोई उचित उत्तर नहीं मिला। फिर मेरे मन में आया कि मैं आज होशियारपुर आश्रम में एक योगी महा पुरुष से मिला था क्यों ना उनसे इस विषय में पूछूं। मैंने नीरू जी को फोन पर सारी स्थिति बताई और सद्गुरु जी से बात करने को कहा। नीरू जी का फोन मुझे रात 10 बजे के बाद आया और उन्होंने कहा कि सद्गुरु जी ने कहा है कि अब डाक्टर को दिखा लो सुबह आश्रम आ जाना। डाक्टर को दिखाया परन्तु कोई बिमारी नहीं थी। परन्तु डाक्टर भी हैरान था कि शरीर का बांया भाग ठंडा क्यों है। अगले दिन मैं होशियारपुर आश्रम सद्गुरु जी के पास गया। सद्गुरु जी ने मुझे स्वयं गर्म पानी से जल नेती करवाई तथा कुछ आसन करवाये। फिर मैं नियमित रूप से कुछ दिनों तक आश्रम जाता रहा। धीरे-धीरे मेरी श्रद्धा सद्गुरु जी के प्रति बढ़ने लगी। सद्गुरु जी ने मुझे ध्यान में बैठने से मना कर दिया। सद्गुरु जी ने कहा तुम्हारी सेहत ठीक नहीं है इसलिये तुम ध्यान में न बैठा करो केवल सेवा करो। एक दिन मैंने सद्गुरु जी

से दीक्षा देने की प्रार्थना की परन्तु सद्गुरु जी टाल गये। एक दिन गुरु माता जी ने सद्गुरु जी से कहा आप सब को दीक्षा देते हैं, मेहता जी को क्यों नहीं देते। फिर सद्गुरु जी ने कहा, "ठीक है, रविवार को दीक्षा दे देंगे। मैंने सुना था कि दीक्षा सुच्चे मुंह (भूखे पेट) लेते हैं। मैं रविवार को बिना कुछ खाये पिये होशियारपुर आश्रम पहुंच गया। परन्तु सद्गुरु जी ने रविवार को होने वाला सत्संग शुरू कर दिया। सत्संग के बाद फिर मैंने गुरुमाता जी से दीक्षा की बात कही। गुरु माता जी ने सद्गुरु जी से कहा आपने तो मेहता जी को दीक्षा के लिये बुलाया था। सद्गुरु जी ने कहा कोई बात नहीं अगले रविवार को दे देंगे। मैं फिर अगले रविवार को आश्रम चला गया। परन्तु सद्गुरु जी फिर दीक्षा के लिये टाल गये। मेरे मन में था कि यदि पूर्ण योगी सद्गुरु दीक्षा देते हैं तो मुक्ति प्राप्त करना कोई मुश्किल काम नहीं है। फिर मैंने सोचा हो सकता है कि मैं अभी दीक्षा लेने का अधिकारी नहीं हूं। मुझे सद्गुरु जी ने कई रविवार दीक्षा के लिये आश्रम बुलाया परन्तु सद्गुरु जी फिर अगले रविवार का समय दे देते। मैं इसी तरह कई रविवार आश्रम दीक्षा के लिये सद्गुरु जी के पास गया। एक दिन गुरुमाता जी ने सद्गुरु जी से कहा आप हर रविवार को मेहता जी को दीक्षा के लिये बुला लेते हैं,

दीक्षा क्यों नहीं देते तब सद्गुरु जी ने कहा ठीक है इसे दीक्षा वीरवार को हवन करा कर देंगे। मैं वीरवार 27 मई सन् 1993 ई० को सद्गुरु जी के पास आश्रम पहुंचा। सद्गुरु जी ने मुझे हवन में बिठाया फिर प्रभु जी के सामने बिठा कर दीक्षा दी तथा आशीर्वाद दिया कि प्रभु जी की अनन्य भक्ति प्राप्त हो। मुझे उस दिन बड़ा आनन्द आया। मन बड़ा शान्त तथा आनंदित था। अब सद्गुरु जी के प्रति मेरी श्रद्धा दिन प्रति दिन बढ़ती चली गई।

1993 ई० की यात्रायें

शिमला यात्रा

अब मैं होशियारपुर आश्रम सप्ताह में तीन चार बार जाने लगा। सद्गुरु जी 6 जून 1993 को योग प्रचार हेतु शिमला आदि जाने वाले थे तो मुझे सद्गुरु जी ने पूछा सत्संग के लिये शिमला तथा कोटगढ़ जाना है। मैंने सद्गुरु जी से प्रार्थना की कि मैं शिमले तक जा सकता हूं क्योंकि मुझे फैक्टरी का काम है। सद्गुरु जी ने कहा ठीक है शिमले तक ही चलो।

6 जून सन् 1993 को मैं पहली बार सद्गुरु जी के साथ योग प्रचार के लिये शिमला गया। रास्ते में 6 जून को नालागढ़ के पास एक गांव में सत्संग था। अगले दिन 7 जून को सद्गुरु जी शिमला पहुंचे। शिमला पुलिस कलोनी में श्री रघुबीर सिंह मेहता जी के घर सत्संग था। जब सद्गुरु जी की कार कालोनी में पहुंची तो बहुत से भक्तों का ध्यान लग गया तथा वह कार के आगे ज़मीन पर ही लेट गये। उन भक्तों की श्वास क्रिया बड़ी तेज चल रही थी। कुछ भक्त महिलायें जोर से चीख मार कर ज़मीन पर गिर गई। यह सब देख कर मैं बड़ा हैरान था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। फिर मैं सद्गुरु जी से आज्ञा

लेकर अपने काम के लिये चला गया और अगले दिन 8 जून को मेरा जन्म दिन था तो सद्गुरु जी ने मुझे सुबह आने को कहा जब मैं सुबह सद्गुरु जी के पास पहुंचा तो सद्गुरु जी आगे कोटगढ़ जाने के लिये तैयार थे। परन्तु मेरा इन्तजार कर रहे थे ताकि मुझे जन्म दिन का आशीर्वाद मिल सके। सद्गुरु जी ने मुझे पहला जन्म दिन का आशीर्वाद दिया और सद्गुरु जी कोटगढ़ के लिये चले गये और मैं जालन्धर वापिस आ गया।

अब मैं सद्गुरु जी की कृपा से आश्रम नियमित रूप से आने लगा तथा हर रविवार के सत्संग में आता। मुझे आश्रम के कार्यों में रुचि होने लगी। सद्गुरु जी ने मुझे आश्रम की सेवा का दान दिया और मैं खुशी-खुशी सेवा करने लगा। इन्हीं दिनों मुझे सद्गुरु जी व गुरुमाता जी का भरपूर स्नेह मिला। एक बार सद्गुरु जी व गुरुमाता जी ने किसी कार्य से कानपुर जाना था। सद्गुरु जी ने मुझे कहा दो टिकटें जालन्धर से कानपुर की 18-9-93 तिथि की बुक करवानी हैं। मैंने दो टिकटें वातानुकूल डिब्बे की बुक करवा दी। जब मैं आश्रम पहुंचा तो सद्गुरु जी को प्रणाम किया तो सद्गुरु जी ने मुझे कहा जो टिकटें बुक करवाई हैं लाओ। मैंने टिकटें सद्गुरु जी को दे दी। सद्गुरु जी ने मुझे डांटते हुए कहा, "किस से पूछ कर वातानुकूल (Air Condition) टिकटें बुक करवाई हैं ?" मैं तो गरीब आदमी हूं

मैं इतने पैसे नहीं दे सकता। परन्तु मैंने प्रार्थना की कि मेरे पैसे तो आप के ही हैं। परन्तु सद्गुरु जी ने कहा नहीं, इसे रद्द करवा कर साधारण डिब्बे की टिकटें बुक करवाओ। सद्गुरु जी का क्रोध देख कर गुरुमाता जी ने कहा कोई बात नहीं, आप इसे मत डांटो ये अपनी श्रद्धा से टिकट लाया है। मुझे पहली बार सद्गुरु जी से डांट पड़ी थी। गुरुमाता जी ने बचा लिया। तिथि 18-9-1993 को सद्गुरु जी ने कानपुर रेलगाड़ी से रात्रि को जालन्धर से जाना था। उस दिन सद्गुरु जी व गुरुमाता जी ने पहली बार दास के घर चरण डाले। सद्गुरु जी व गुरुमाता जी 24-9-93 को कानपुर से जालन्धर वापिस आ गये। जालन्धर से कार द्वारा होशियारपुर आश्रम पहुंचे।

उन्हीं दिनों में सद्गुरु जी ने श्री योग महा दिव्य रामायण का ''विनय काण्ड'' छपवाना था। मैंने सद्गुरु जी से प्रार्थना की कि जालन्धर में प्रिंटिंग प्रैस का मुख्य काम है। यदि आप की आज्ञा हो तो मैं जालन्धर से छपवा देता हूं। सद्गुरु जी ने यह सेवा मुझे बक्शी। परन्तु मुझे किताबें छपवाने के बारे में कोई अनुभव नहीं था। मेरी अपनी दुकान की किताबें जिस प्रैस से छपती थीं उससे मैंने सम्पर्क किया। उस सज्जन ने मुझे कहा ब्लाक अक्षरों की बजाय Computer से किताब को Compose (मुद्रित) करवायें क्योंकि उसकी छपवाई बहुत सुन्दर आती है।

दूसरी बार छपवाने में खर्च भी कम आयेगा। मैंने उस की सलाह से Computer वाले को विनय काण्ड Compose करने को दिया। ''विनय काण्ड'' Compose (मुद्रित) के पश्चात् मैं सद्गुरु जी के पास Proof Reading के लिये खुशी-खुशी ले गया तो सद्गुरु जी ने देख कर कहा यह कोई Proof नहीं है। Proof तो एक-एक पेज का होता है जैसे किताब छपती है। ये तो सीधा तथा छोटे-छोटे अक्षरों में है। सद्गुरु जी ने Proof वाली कापी वापिस करते हुये मुझे डांट मारी और कहा इसमें इतनी गल्तियां हैं कि इसकी Proof Reading कौन करेगा। मुझे इस विषय में अधिक जानकारी नहीं थी। मैं वह किताब Computer वाले के पास ले गया तथा कहा आप किताब के साईज के ही Proof दो तथा गल्तियां कम करो। उसने मुझे समझाया कि आप इस किताब की गल्तियां ठीक कर के दें। साईज Computer से जो चाहोगे वह बन जायेगा। उस में कोई परेशानी नहीं है। यह बात मैंने सद्गुरु जी को बताई तथा Proof Reading स्वयं करनी शुरू की और सात बार ''विनय काण्ड'' का Proof किया और ठीक करवा कर आखिर में सद्गुरु जी से अन्तिम Proof Reading करवाई। बार-बार Proof Reading से मुझे ''विनय काण्ड'' से काफी ज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरी हिन्दी भाषा में भी सुधार हुआ।

हमीरपुर यात्रा

सद्गुरु जी 18 नवम्बर सन् 1993 ई० से 22 नवम्बर 1993 ई० तक योग प्रचार के लिये हमीरपुर गये। सद्गुरु जी की कृपा से मैं भी सद्गुरु जी के साथ गया। सद्गुरु जी के साथ योग प्रचार हेतु यह मेरी दूसरी यात्रा थी। यहां सद्गुरु जी ने हमीरपुर में श्री चन्द्रमोहन अरोड़ा के, श्री गोपी राम गांव भोरंज के, श्री धर्म सिंह ठाकुर गांव टिक्कर खत्रियां के, श्री जयराज गांव खदेहड़ा तथा श्री प्रकाश चन्द्र राणा गांव धनोटू हमीरपुर के यहां सत्संग किया। जब वापसी वाले दिन सत्संग में आरती हो रही थी तो मैं आंखें बन्द करके आरती कर रहा था तो एक दृश्य मेरे सामने आया कि मैं यहां से सद्गुरु जी के साथ कार द्वारा वापिस होशियारपुर जा रहा हूं और आगे से एक बस आ रही है जो मेरी कार से टकराती हुई निकल जाती है। मेरी समझ में कुछ अधिक नहीं आया परन्तु मैंने सोचा कार को ध्यान से चलाना है। जब हम यहां से वापिस होशियारपुर जा रहे थे तो वही दृश्य सामने आया और बस कार से टकराती हुई निकल गई परन्तु वह केवल साईड वाले शीशे से टकराई। उस समय मैंने कार को तुरन्त एक ओर कर लिया। प्रभु कृपा से सब बच गये। सद्गुरु

जी की अपार कृपा से मुझे पहले ही दृश्य दिख गया और दुर्घटना से बच गये।

जब सद्गुरु जी के संग योग प्रचार के लिये जाता तो भक्तों के घर मन्दिर में प्रभु जी का चित्र ब्लैक और व्हाइट देखता तो मुझे प्रभु जी का मन्दिर देखने में कुछ अच्छा न लगता। उसे सुन्दर बनाने के लिये सोचता रहता। एक दिन सद्गुरु जी ने अपने प्रवचनों में कहा कि प्रभु जी का मन्दिर इतना सुन्दर बनाओ कि उसी सुन्दर मन्दिर की छवि को अपने मन में बसाओ ताकि हमारी प्रभु जी के प्रति श्रद्धा तथा भक्ति बढ़े। सत्संग के पश्चात् मैंने सद्गुरु जी से बात की कि मैं प्रभु जी के रंगीन बड़े आकार के चित्र बनवाना चाहता हूं। परन्तु सद्गुरु जी ने मना करते हुये कहा छोटे चित्रों से भक्तों का काम चल रहा है। परन्तु मैंने फिर सद्गुरु जी से बेनती की कि आपने प्रवचनों में हमें कहा था कि प्रभु जी का सुन्दर मन्दिर बनाओ तथा उस मन्दिर की छवि अपने मन में बसाओ। सुन्दर रंगीन चित्र भी हमारे पास नहीं हैं। प्रभु जी के चित्र भी बड़े होने चाहिये तथा हमारे पास सद्गुरु जी का चित्र भी नहीं है। परन्तु सद्गुरु जी ने फिर चित्र बनाने के लिये मना कर दिया। मुझे जब भी मौका मिलता मैं सद्गुरु जी से प्रभु जी के चित्र बनवाने की

बेनती करता और हर बार डांट पड़ती। एक दिन सद्गुरु जी बड़े अच्छे मूड़ में गुरुमाता जी के संग आश्रम में बैठे थे। मैंने फिर प्रभु जी के चित्र बनवाने की बात की। सद्गुरु जी ने कुछ समय सोच कर मुझे चित्र बनवाने की आज्ञा दे दी। फिर मैंने सद्गुरु जी की कृपा से दिल्ली से तीन चित्र (प्रभु जी का, स्वामी मुलखराज जी तथा सद्गुरु जी का) बनवाये। जो आज सब भक्तों के घरों में मन्दिर में स्थापित हैं। सद्गुरु जी के प्रवचनों से मुझे प्रेरणा मिली तथा उनकी अपार कृपा से यह सब सम्भव हुआ।

1994 ई० में यात्रायें

लिद्धड़कलां यात्रा

14 जनवरी सन् 1994 को आश्रम में मुलखराज जी का जन्म दिन का उत्सव सम्पन्न हुआ। अगले दिन सद्गुरु जी व गुरु माता जी के साथ मैं लिद्धड़कलां (बंगा) सत्संग में गया। वहां श्री निर्मल सिंह सैनी के साथ गांव वाले हर वर्ष श्री योग महा दिव्य रामायण का पाठ रखते थे। उन्होंने सद्गुरु जी व गुरु माता जी के आगमन पर सारे गांव की सफाई कर रखी थी तथा सुन्दर-सुन्दर गेट बना रखे थे। उनका सेवा भाव देख कर मन प्रसन्न हुआ। वहां पर गांव का ही एक निवासी सरदार जी अपने जवान लड़के (मनजीत सिंह) को सद्गुरु जी के पास लाया। उस लड़के की बुद्धि मन्द थी तथा तोतला भी बोलता था। लगभग लड़का आधा पागल सा था। सद्गुरु जी ने उस लड़के को आसन करवाये। श्री निर्मल सिंह जी से वह लड़का हर रोज आसन सीखता व नेति वमन क्रिया करता। कुछ समय पश्चात् वह लड़का काफी ठीक हो गया। अब वह हर बात को समझ सकता है तथा प्रभु जी की भक्ति भी करता है। पहले वह जब भी भोजन करता था तो बहुत सा भोजन खा जाता था। अब वह काफी ठीक है तथा सामान्य भोजन लेता है।

शिमला यात्रा

5 जून से 13 जून सन् 1994 ई० को सद्गुरु जी व गुरुमाता जी ने योग प्रचार के लिये चण्डीगढ़, शिमला, आंटी (जुब्बल), रोहड़ू, कलोटी, टिक्करी आदि जाना था। सद्गुरु जी हर वर्ष जून में शिमला की तरफ योग प्रचार हेतु जाते थे। सद्गुरु जी की कृपा से मुझे भी साथ जाने का आदेश प्राप्त हुआ। मैंने अपनी धर्म पत्नी से सद्गुरु जी के साथ जाने की बात की परन्तु उन्हीं दिनों मेरे ससुर जी काफी बिमार थे। उन्हें लीवर कैंसर था। डाक्टरों ने जवाब दे दिया था। वह कई दिनों से कुछ खा भी नहीं रहे थे। मेरी धर्म पत्नी ने जाने से मना कर दिया। परन्तु मैंने कहा मैं जरूर जाऊंगा। क्योंकि सद्गुरु जी का आदेश है। परन्तु मेरी धर्म पत्नी ने मुझे भी जाने से मना करते हुए कहा कि लोग क्या सोचेंगे कि पिता मरने की स्थिति में है और आप शिमला जा रहे हैं। लोग तो यही सोचेंगे कि सैर के लिये शिमला जा रहे हैं। परन्तु मैंने कहा मैं जरूर जाऊंगा। मैंने पत्नी को समझाते हुये कहा कि मैंने सद्गुरु जी को साथ जाने के लिये कह दिया है और आप के पिता जी को कुछ नहीं होगा। मैंने कहा यदि सद्गुरु जी मुझे साथ ले गये तो आप के पिता जी जरूर बच जायेंगे। यदि सद्गुरु जी मुझे साथ नहीं ले जाना

चाहते तो वह मेरी टांग तोड़ देंगे ताकि मैं कार न चला सकूं। मैंने पत्नी को सलाह दी कि हम दूसरी कार (टैक्सी) साथ ले जाते हैं। यदि आप के पिता जी को कुछ होता है तो वह टैक्सी सद्गुरु जी के लिये छोड़ देंगे तथा हम अपनी कार से वापिस आ जायेंगे। दूसरा आप हर रोज Telephone से पिता जी का हाल पूछ लेना। इस बात से पत्नी साथ जाने के लिये सहमत हो गई। जब हम सत्संग से वापिस आये तो सद्गुरु जी की कृपा से मेरे ससुर जी ठीक होने लगे तथा लिवर कैंसर भी ठीक होने लगा। उस समय मेरे ससुर जी की आयु लगभग 88 वर्ष थी उसके पश्चात् ससुर जी सुखपूर्वक जीवन बिताते हुए लगभग 100 वर्ष की आयु होने पर ही दिवंगत हुये। सद्गुरु जी की कृपा की महिमा कथनी से गाई नहीं जा सकती वह बेअंत हैं।

चण्डीगढ़ श्री कृष्ण लाल खेतरपाल जी के घर सत्संग के पश्चात् हम 6 जून को श्री रघुबीर सिंह मेहता जी के घर कुसुम्टी शिमला पहुंचे। शिमला में वर्षा हो रही थी। 7 जून को शिमला से सद्गुरु जी ने प्रताप सिंह प्रिम्टा के गांव आंटी जाना था। शिमला में मुझे प्रताप सिंह जी मिले और कहने लगे कि मेरे घर सद्गुरु जी जा रहे हैं। परन्तु मेरी ड्यूटी मुख्य मन्त्री के साथ लग गई है और मुझे छुट्टी नहीं मिल रही। दूसरी बात यह कि मेरे

पिता जी घर में मरणावस्था में हैं। एक बहिन बिमार पड़ी है दूसरी बहिन को पागलों जैसे दौरे पड़ रहे हैं। डाक्टरों ने पिता जी के ईलाज के लिये जवाब दे दिया है। मैं सद्गुरु जी की सेवा कैसे करूंगा। इतना कह कर प्रताप जी रोने लगे। मैंने उन को हौसला देते हुए कहा आप घबराएं नहीं आप सद्गुरु जी से मिलो। सद्गुरु जी ने प्रताप सिंह जी को कहा आप घबराएं नहीं आप अपनी ड्यूटी पर जाओ। प्रताप सिंह उस दिन छुट्टी न मिलने के कारण अपने गांव नहीं जा सके। तब वहां का सारा प्रबन्ध प्रताप सिंह जी के ससुर श्री पृथ्वी सिंह मेहता जी ने किया।

जब सद्गुरु जी के साथ हम आंटी गांव पहुंचे तो वह गांव एक ऊंची पहाड़ी की चोटी पर था और अकेला ही घर था। उस के आसपास कोई और घर नहीं था। मैंने सड़क के किनारे सभी गाड़ियों को खड़ा किया। सभी भक्तजन सद्गुरु जी व गुरुमाता जी को पालकी में लेकर चले गये। मैं अकेला पीछे रह गया। जब मैं चढ़ाई चढ़ने लगा तो काफी थका हुआ था और चढ़ाई चढ़ने की हिम्मत नहीं थी। मैं कभी सड़क को देखता तो कभी गांव की चोटी को। गांव जाने के लिये छोटी सी पगडंडी थी तथा सीधी चढ़ाई थी। पगडंडी के एक ओर गहरी खाई थी।

मैं धीरे-2 ऊपर की ओर चढ़ने लगा तभी हल्की-2 वर्षा होने लगी। मैं सोचने लगा गांव में अकेला घर है। यहां योग सीखने कौन आयेगा। सद्गुरु जी क्या सोच कर यहां आये हैं। इन्हीं विचारों में डूबा हुआ मैं कब चोटी पर पहुंच गया मुझे पता भी नहीं चला और मेरी सारी थकावट दूर हो गई। मैं एक दम तरोताजा महसूस करने लगा। जब मैं सद्गुरु जी के कमरे में पहुंचा और माथा टेकने लगा तो गुरुमाता जी ने कहा यहां हम अपनी मर्जी से नहीं आये प्रभु जी की मर्जी थी।

कई आत्माओं का कल्याण प्रभु जी ने करना है। हम तो प्रभु जी की आज्ञा मान कर यहां आये हैं। आप व्यर्थ में चिन्ता मत करो। मैं यह सोचकर बड़ा शर्मिंदा हुआ कि व्यर्थ में सोच रहा हूं। फिर यह सोच कर खुश हुआ कि सद्गुरु जी सदा हमारे मन के साथ रहते हैं। प्रताप सिंह की बहिन को उसी रात फिर दौरा पड़ा और वह बहुत शोर मचाने लगी और पागलों जैसी हरकतें करने लगी। सद्गुरु जी ने कहा इसे तुरन्त शिमला हस्पताल में ले जाओ। दूसरे दिन प्रताप सिंह के पिता श्री भाग चन्द को बिमारी की अवस्था में ही सद्गुरु जी ने हवन करवाया। 8 जून को सद्गुरु जी सत्संग के पश्चात् आंटी गांव से जखार गांव (रोहड़ू) के लिये चले गये।

कुछ महीनों के पश्चात् भाग चन्द उठे और कहने लगे मेरा मुख प्रभु जी के चित्र की ओर कर दो वह मुझे लेने आये हैं। जैसे ही उनका मुख प्रभु जी की ओर किया उसी समय उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। सद्गुरु जी की कृपा से उन्हें मुक्ति मिली। गीता में कृष्ण भगवान जी ने कहा है कि अन्त समय जैसी मति वैसी गति। प्रताप सिंह की पागल बहिन भी उन्हीं दिनों ठीक हो गई तथा अब वह वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रही है। दूसरी बहिन जो बीमार रहती थी प्रभु चरणों में चली गई। प्रताप सिंह जी की धर्म पत्नी श्रीमती राधा प्रिम्टा जो बचपन से ही सद्गुरु जी की शरण में रही गुरुमाता जी की गोद में खेली। राधा जी हर कार्य सद्गुरु से पूछ कर करती। राधा जी के पास सद्गुरु जी के हज़ारों पत्र हैं। जो समय-2 पर अपनी समस्या लिख कर सद्गुरु जी को देती थी तथा सद्गुरु जी पत्र द्वारा उस का निवारण कर देते थे। गुरु माता जी अकसर राधा जी को कहती थी कि ये सब पिछले जन्मों के संस्कार हैं जो सद्गुरु जी से इतना प्यार ले रही हो।

8 जून को हम सद्गुरु जी के साथ श्री ज्वाला दास जी के घर ज़खार पहुंचे श्री ज्वाला दास जंगलात में अफसर हैं और शिमला में परिवार सहित रहते हैं। गांव में महीने में एक दो बार

अपना बगीचा देखने आ जाते हैं। उनकी धर्म पत्नी श्रीमती तारा देवी प्रभु जी की बहुत भक्त है। उसकी श्रद्धा को देखते हुये सद्गुरु जी ने यहां सत्संग रखा। जब रात हुई तो गुरुमाता जी ने मुझे कहा जाओ देखो सब भक्तों को सोने के लिये पर्याप्त बिस्तरे मिल गये हैं ? आज से सब भक्तों के लिये सोने का प्रबन्ध कर के ही तू सोना। मैंने गुरुमाता जी को प्रणाम किया और चल दिया भक्तों के लिये बिस्तरों का प्रबन्ध करने। मैंने देखा आधे से अधिक भक्त जन रजाईयों के बिना लेटे हैं। मैंने श्रीमती तारा देवी से इस विषय में बात की। वह कहने लगी मैंने पहली बार सत्संग करवाया है। मुझे इतना अनुभव नहीं है। दूसरा रात्रि को 150 के लगभग भक्त थे। मैंने कहा कोई बात नहीं पड़ोसियों से कुछ बिस्तर मांग लाते हैं। वह कहने लगी कि स्टोर में कुछ बिस्तरें हैं देख लो मैं और मेरी पत्नी स्टोर में बिस्तरें देखने गये तो वहां 25-30 रजाईयां मिल गई जो मैंने दो-2 भक्तों के लिये एक-एक रज़ाई दे दी। फिर भी अभी काफी भक्तों को रज़ाई की जरूरत थी। श्रीमती तारा देवी ने कुछ सोच कर कहा शायद कुछ रजाईयां ऊपर वाले स्टोर में हो। हम ने देखा स्टोर में बिस्तरें पड़े थे। अब केवल 10 भक्त ही बिस्तरों के बिना रह गये थे। मैंने कहा कोई बात नहीं आप मेरे

साथ पड़ोसियों के घर चलो हम 5 रजाईयां वहां से ले आते हैं। कुछ सोचने के पश्चात् तारा देवी बोली इस कमरे के साथ एक स्टोर और है वहां देखते हैं। जब उस स्टोर में हम ने एक ट्रंक को खोला तो उस में 10 रज़ाईयां और निकल आई। सभी भक्तों के लिये बिस्तरें घर से ही पूरे हो गये। मैं यह सोच कर बहुत हैरान था कि घर के लोगों को अपने घर के समान का भी पता नहीं तथा एक ही घर से इतने बिस्तरे निकल आये हैं। शायद इतने बिस्तरें प्रभु जी ने अपने भक्तों के लिये ही बनवाये थे।

9 जून को हम सद्गुरु जी के साथ कलोटी गांव (रोहड़ू) के लिये चल दिये। जहां सत्संग श्री यशवन्त सिंह के घर था। जो सड़क से लगभग तीन किलोमीटर दूरी पर था। मैं कार को कच्ची सड़क से ही ले गया। सद्गुरु जी व गुरु माता जी घोड़ों पर बैठ कर खड्डु को पार करके गांव में पहुंचे। तब हल्की-हल्की वर्षा भी हो रही थी।

शाम को सद्गुरु जी जब भक्तों को मिल रहे थे तो गांव के दो बूढ़े आदमी जो ठीक से खड़े भी नहीं हो सकते थे। दरवाजे पर कहने लगे हम अन्दर आ सकते हैं। सद्गुरु जी ने उठ कर कहा हां-हां अन्दर आइये, हम तो आये ही आप के लिये हैं। सद्गुरु जी ने तुरन्त हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद

दिया। ऐसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था कि सद्गुरु जी इस प्रकार किसी को आशीर्वाद दे। मैं इतना जरूर समझ गया कि सद्गुरु जी इन बजुर्गों पर जरूर विशेष कृपा करेंगे। जब दोनों बजुर्ग कमरे में अन्दर आये तो उनके कपड़ों से बहुत बदबू आ रही थी, ऐसा लगता था जैसे कई महीनों से कपड़े ही नहीं बदले। वह दोनों व्यक्ति काफी खांस-खांस कर सद्गुरु जी को अपनी तकलीफें बता रहे थे। परन्तु सद्गुरु जी ने उन्हें आसन लिख दिये और कहा आप ये आसन यशवन्त जी से सीख लेना तथा आप ठीक हो जाओगे।

जब सभी लोग सद्गुरु जी के कमरे से चले गये तो मैंने सद्गुरु जी से बेनती की कि गांव तो बहुत छोटा है और लोग भी बहुत कम आये हैं। यहां कौन योग सीखने आयेगा। सद्गुरु जी मुस्कुराते हुये बोले अच्छा हम सब की चाबी मरोड़ देते हैं। सुबह सारे गांव के लोग आसन सीखने आ जायेंगे। सुबह मैंने देखा तो लगभग तीन सौ व्यक्ति लाईन में नेती तथा वमन कर रहे हैं। मुझे बड़ी हैरानी हुई।

मैंने दूसरी बेनती सद्गुरु जी के चरणों में की। हम जहां भी जाते हैं शाम को पहुंचते हैं। रात को पाठ करते हैं तथा सुबह आरती के पश्चात् कुछ आसनों का प्रदर्शन करके चले जाते हैं।

परन्तु आसनों के प्रदर्शन के पश्चात् तो लोग आप से इस विषय में कुछ पूछेंगे तथा तभी तो अगले दिन आसन सीखने आयेंगे। यह सत्संग कम से कम दो रात तीन दिन का होना चाहिये। सद्गुरु जी ने मुस्कुराते हुये कहा ठीक है। इस पर विचार करेंगे। इस के पश्चात् जितने भी भक्तों के घर सत्संग हुये वह दो रात तथा तीन दिन के ही हुये।

11 जून 1994 को सद्गुरु जी ठाकुर शमशेर सिंह के निवास स्थान टिक्करी गांव (रोहडू) सत्संग के लिये पहुंचे। वहां उपस्थित भक्तों ने सद्गुरु जी का भव्य स्वागत किया। मैंने देखा सद्गुरु जी की कृपा से 20 से 25 भक्तों का सड़क पर ही ध्यान लग गया और वह भक्त जन वही समाधियों में जमीन पर ही लेट गये। उन दिनों रोहडू का मौसम वर्षा के कारण रात को ठंडा था। रात को रजाई की जरूरत पड़ती थी। ठाकुर शमशेर सिंह जी ने अपने घर के ऊपर अभी-अभी नया हाल सत्संग के लिये ही बनाया था तथा उस भवन की सफेदी अभी कुछ-कुछ गीली थी। रात को सोने के लिये हाल कुछ ठंडा था। रात को सत्संग के बाद गुरुमाता जी ने मुझे कहा जाकर देखो कि भक्तों की सोने की व्यवस्था हो गई है। मैंने सब कमरों में जाकर देखा जिन भक्तों के पास बिस्तर कम पड़े तो उन्हें बिस्तर पहुंचाये।

जब सब भक्तों की सोने की उचित व्यवस्था हो गई तो अन्त में मैं एक रजाई लेकर सत्संग हाल में सो गया। कुछ समय पश्चात् मेरे पास सोमनाथ जी आये कहने लगे मेहता जी मेरे पास सोने के लिये रजाई नहीं है मैं आप के साथ सो जाऊ, मैंने कहा सो जाओ। थोड़ी देर में मेरे पास राम तीर्थ जी आये और कहन लगे मेहता जी मेरे पास भी रजाई नहीं है मैं भी आप के साथ सो जाऊँ मैंने कहा सो जाईये। रात को लगभग 12 बजे हरदयाल जी आ गये कहने लगे मेहता जी मेरे पास सोने को बिस्तरा नहीं है। क्या मैं आप के साथ सो सकता हूँ। मैंने कहा क्यों नहीं। अब एक रजाई में चार व्यक्ति सोये थे सद्गुरु जी की कृपा से हम चारों को सोने में कोई तकलीफ नहीं हुई।

सुबह श्री सुरेन्दर सिंह मेहता (चायल वाले) की लड़की श्रीमती सुमति श्री योग महा दिव्य रामायण का पाठ कर रही थी। उस की वाणी में बहुत मिठास थी। मुझे पता भी नहीं चला कि मैं रामायण सुनते-सुनते कब रामायण में खो गया तथा मेरी आखें नम हो गई। ऐसा दिन में कई बार हुआ और मुझे उस दिन भूख प्यास भी नहीं लगी। फिर मैंने होशियारपुर पहुंच कर सद्गुरु जी से सुमति की आवाज में रामायण की कैसेट टेप करवाने की अनुमति मांगी तो सद्गुरु जी की आज्ञा से कुछ

कैसेट श्री योग महा दिव्य रामायण की रिकार्ड करवाई।

ठाकुर जी के यहां बहुत से भक्तों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ली। 12 जून को श्री बलबीर सिंह सिंघा तथा 13 जून को श्री सत्यवान मेहता (शिमला) के यहां सत्संग हुआ। सद्गुरु जी 13 जून को ही होशियारपुर आश्रम वापिस आ गये। मुझे सद्गुरु जी के साथ जाने से बहुत से भक्ति के अनुभव हुये तथा भक्तों की श्रद्धा देखकर मेरे मन में भी और अधिक योग के प्रति उत्साह बढ़ा। जब सद्गुरु जी की कृपा से भक्तों की ध्यान समाधि लगती तो भक्तजन जिस अवस्था में होते वही गिर जाते। परन्तु उनको कही भी शरीर पर चोट नहीं लगती थी। ये सब सद्गुरु जी की अपार कृपा ही तो है।

मण्डी यात्रा

8 सितम्बर से 16 सितम्बर 1994 को सद्गुरु जी का योग प्रचार हेतु कार्यक्रम पण्डोह, मण्डी, सुन्दर नगर, निहारी (घुमारवीं) तथा बिलासपुर के लिये था। सद्गुरु जी की कृपा से मुझे भी साथ जाने का सुअवसर मिला। इस अवसर पर अमेरिका से सद्गुरु जी के दामाद श्री मोहन लाल खेतरपाल जी भी आये हुये थे। सद्गुरु जी के साथ होशियारपुर से काफी भक्त कैन्टर (मिनी ट्रक) से योग प्रचार के लिये गये। जब हम

पण्डोह पहुंचे तो श्री जगदीश चन्द्र रुदकी तथा भूप चन्द शर्मा जी के साथ भक्तों ने सद्गुरु जी का भव्य स्वागत किया तथा सत्संग के लिये वहां काफी बड़ा हाल था। सद्गुरु जी से बहुत से लोगों ने दीक्षा ली तथा बहुत से लोगों ने अपनी बिमारी के लिये हठ योग की क्रियाएं तथा आसन सीखे।

10 सितम्बर को सद्गुरु जी के साथ हम मण्डी पहुंचे। मण्डी में डाक्टर नील मणि उपाध्याय जी ने सत्संग का प्रबन्ध अपने निवास स्थान पर कर रखा था। यहां भी सत्संग में आये लोगों ने अपनी बिमारियों के विषय में हठ योग के आसन सीखे।

12 सितम्बर को सुन्दर नगर से सत्संग के पश्चात् सद्गुरु जी 14 सितम्बर को निहारी गांव जो घुमारवी के पास है पहुंचे। घुमारवी में श्री एल.आर. ठाकुर जी के घर पहुंचे। ठाकुर जी का मकान कच्चा था।

यहां हम एक वृद्ध व्यक्ति से मिले। जिस को अधरंग (Paralise) हो गया था। हमने सोचा कि यह बजुर्ग ठाकुर जी का बड़ा बजुर्ग होगा। परन्तु बात करने से पता चला कि वह तो योग के आसन सीखने के लिये ठाकुर जी के घर रह रहा है। ताकि अधरंग की बिमारी से ठीक हो जाए जो आसन सद्गुरु

जी ने लिख कर दिये थे वह ठाकुर जी की बेटी तथा भक्त लुहारू राम से सीख रहा था। वह अपना नित्य कर्म भी स्वंय नहीं कर सकता था। ठाकुर जी तथा उनकी बेटी की अनथक मेहनत रंग लाई। वह व्यक्ति 6 महीने बाद जनवरी में आश्रम लाठी के सहारे आया तथा साल भर में ही उस के सारे शरीर के अंग काम करने लगे। डाक्टरों की दवा से आराम नहीं आया तो सद्गुरु जी की कृपा से आसन करने से ठीक हो गया।

निहारी गांव में ठाकुर जी के निवास स्थान पर भक्तों के ठहरने के लिये स्थान कम था। ठाकुर जी ने अपने घर से लगभग 2 कि.मी. दूर एक रैस्ट हाऊस बुक करवा रखा था। मोहन लाल खेतरपाल जी के साथ हम सब को रैस्ट हाऊस में रात्रि विश्राम के लिये भेज दिया। मैं सब को सुला कर स्वंय एक गद्दा लेकर पंखे के नीचे लेट गया। गद्धा गीला था। इस कारण मुझे नींद नहीं आ रही थी। ऊपर से पंखा भी पुराना होने के कारण आवाज कर रहा था। गद्दे में खटमल भी थे। परन्तु कुछ समय पश्चात् पंखे के शोर से मुझे श्री योग महा दिव्य रामायण के शब्द सुनने लगे। मैं उस में खो गया। मुझे पता भी नहीं चला कि कब आंख लग गई। परन्तु मैं स्वप्न में सारी रात पंखे से रामायण सुनता रहा। 16 सितम्बर को सद्गुरु जी के साथ

बिलासपुर सत्संग करने के पश्चात् हम सब होशियारपुर वापिस आ गये।

दुलैहड़ यात्रा

सद्गुरु जी के साथ 7 अक्तूबर 1994 से 9 अक्तूबर 1994 को श्री अमृत लाल गुलेरिया जी के निवास स्थान दुलैहड़ गांव (ऊना) में सत्संग में जाने का अवसर मिला। अमृत लाल जी हिमाचल प्रदेश में तहसील दार के पद पर नियुक्त हैं। गुलेरिया जी का सारा परिवार प्रभु जी का बहुत भक्त है। जब उन के घर सत्संग था तो उनकी धर्म पत्नी को अधरंग हुआ था। इस अवस्था में भी गुलेरिया जी ने सत्संग की सारी व्यवस्था की उनकी धर्म पत्नी ने दवा लेने से मना कर दिया और कहती कि जो आसन सद्गुरु जी ने लिख कर दिये हैं उन्हीं द्वारा ठीक हो जाऊंगी। सद्गुरु जी जानी जान हैं। मैंने दवा से नहीं सद्गुरु जी के आसनों से ही ठीक होना है तथा सद्गुरु जी जो स्वंय अपनी कृपा करेंगे। इस हालत में भी गुलेरिया जी ने सत्संग का प्रबन्ध तथा भक्तों की सेवा स्वंय की।

एक दिन गुलेरिया जी की पत्नी अपनी बिमारी की अधिक चिन्ता कर रही थी कि बच्चे भी छोटे-छोटे है और मेरी यह अवस्था है। इस विचार से वह रोने लगी और रोते-रोते उस क

ध्यान लग गया और प्रभु जी के दर्शन हुये। प्रभु जी ने कहा चिन्ता मत करो तुम ठीक हो जाओगी। उसके पश्चात् वह धीरे-धीरे ठीक होने लगी। अब वह बिल्कुल स्वस्थ है। सद्गुरु जी की अपार कृपा व गुलेरिया जी की पत्नी के विश्वास से ही अधरंग जैसी बिमारी से निजात मिल पाई।

एक दिन मुझे भी स्वप्न में प्रभु जी मिले और उनके साथ दो और साधु थे। मुझे प्रभु जी कहने लगे कहां है तेरे गुरु जी, मैंने हाथ जोड़ कर कहा गुलेरिया जी के घर सत्संग कर रहे हैं। प्रभु जी डांट कर बोले जाओ अपने गुरु जी को जल्दी बुला कर लाओ। मैं सहमा सा भागा-भागा सद्गुरु जी के पास गया और कहा सद्गुरु जी आप को प्रभु जी बुला रहे हैं। सद्गुरु जी ने कहा प्रभु जी कहां है, मैने हाथ जोड़ कर कहा गुलेरिया जी की गली में खड़े हैं। सद्गुरु जी भागे-भागे प्रभु जी के पास पहुंचे तथा दण्डवत प्रणाम करते हुये सड़क पर ही लेट गये। परन्तु प्रभु जी ने एक दम पीठ कर ली। परन्तु सद्गुरु जी वहां से नहीं हिले। कुछ देर बाद प्रभु जी ने सद्गुरु जी को जमीन से उठाया और कहने लगे तुम्हारी जगह जमीन पर नहीं, मेरे हृदय में है तथा उसी क्षण प्रभु जी ने सद्गुरु जी को अपने गले से लगा लिया। मैं सहमा सा यह सब कुछ पास खड़ा देख रहा था। तभी

प्रभु जी ने मुझे कहा तू क्यों उदास खड़ा है। तू भी आ जा तभी प्रभु जी ने दूसरे हाथ से मुझे भी अपनी छाती से लगा लिया। प्रभु जी ने एक साथ सद्गुरु जी को और मुझे अपनी बाहों में ले लिया। इस से मेरे मन में एक अद्भुत सा उल्लास था। इस क्षण को मैं जब भी याद करता हूँ तो मेरी आखें खुशी से भर जाती हैं तथा भस्त्रिका चलने लगती है।

सद्गुरु जी भी कई बार अपने प्रवचनों में कहते हैं कि यदि मन भक्ति से विचलित हो तो प्रभु की कृपा को याद कर के अपने मन को दृढ़ करो। ताकि हमारी श्रद्धा प्रभु जी के प्रति बनी रहे।

हमीरपुर यात्रा

सद्गुरु जी ने 18 नवम्बर से 21 नवम्बर 1994 को हमीरपुर योग प्रचार के लिये जाना था। मुझे साथ चलने की आज्ञा हुई। 18 नवम्बर को होशियारपुर से भोटा पहुंचे। वहां श्री हेम राज शर्मा के घर सत्संग था। मास्टर श्री धर्म सिंह ठाकुर जी द्वारा शिक्षित कुछ नौ जवान लड़कों ने योग आसनों का प्रदर्शन किया। सद्गुरु जी को बच्चों का प्रदर्शन बहुत अच्छा लगा। उन में एक नौ जवान लड़का विक्रम जीत सिंह चौहान (विक्की था। सद्गुरु जी ने उसे देख कर कहा यह गुदड़ी में छुपा लाल

है। होनहार बिरवान के होत हैं चिकने पात। सद्गुरु जी ने विक्की को योग पर दो शब्द बोलने को कहा। सद्गुरु जी की ऐसी कृपा हुई कि विक्की का पूरा परिवार ही प्रभु भक्त बन गया। आज विक्की तथा उसका बड़ा भाई राजेन्द्र चौहान आश्रम की सेवा बड़ी श्रद्धा से कर रहे हैं।

19 नवम्बर को सद्गुरु जी के साथ हम दिम्मी गांव ठाकुर दलीप सिंह के घर सत्संग के लिये पहुंचे। दलीप सिंह जी स्कूल में डी.पी. की पोस्ट पर हैं। जब दलीप जी नौ जवान थे तो उनको स्वप्न में प्रभु जी के दर्शन हुये थे। सौभाग्य से सन् 1980 में दलीप सिंह जी होशियारपुर आश्रम आये और सद्गुरु जी से दीक्षा ग्रहण की। दलीप सिंह जी की पांच बेटियां तथा एक लड़का है। लड़का सद्गुरु जी के आशीर्वाद से प्राप्त हुआ। दलीप सिंह जी ने मुझे अपनी बेटी रंजुला से मिलाया। रंजुला का प्रभु भक्ति में बहुत ध्यान लगता है। उस ने मुझे अपने ध्यान का अनुभव बताया कि एक बार ध्यान लगा तो महाप्रभु जी उसे अपने साथ आकाश में ले गये। जब उसने नीचे ज़मीन पर देखा तो उसे सारी धरती प्रकाशवान लगी। सभी जीव जन्तु उसे धरती पर दिखाई दिये, यहां तक की धरती पर कीड़ी भी चलती हुई दिखाई दी। महाप्रभु जी का इतना तेज प्रकाश था। उसने आगे

बताया कि एक बार आश्रम में उसका ध्यान लगा तो प्रभु जी आ गये। उसने प्रभु जी के संग बहुत नाच किया तथा उसे अलौकिक आनन्द का अनुभव हुआ। यह सब सद्गुरु जी की अपार कृपा से हुआ। आज भी ठाकुर दलीप सिंह का परिवार प्रभु भक्ति में रंगा हैं।

21 नवम्बर को सद्गुरु जी सधरियां (भौरंज) गांव गये। यहां श्री बरडू राम जी के घर सत्संग था। श्री बरडू राम जी चमड़े का काम करते हैं। यहां गांव से बहुत से लोगों ने आसन तथा नेती, वमन आदि सद्गुरु जी से सीखे। यहां एक विशेष बात हुई कि गांव के ठाकुर लोग श्री बरडू राम जी के घर सत्संग पर नहीं आना चाहते थे क्योंकि वह चमड़े का काम करते हैं। इनके घर का बना हुआ भोजन भी नहीं करना चाहते थे परन्तु लोगों के विरोध के बावजूद भी यहां सत्संग में बहुत भक्त आये। योगी सद्गुरु जी मनुष्य में भेद भाव नहीं देखते ना ही जात पात देखते हैं। वह तो केवल उसके हृदय के भाव देखते हैं। 23 नवम्बेर 1994 को सद्गुरु जी के साथ हम होशियारपुर वापिस आ गये।

सन् 1995 ई० की यात्रायें

शिमला यात्रा

6 जून से 16 जून 1995 को सद्गुरु जी व गुरुमाता जी शिमला तथा रोहडू के लिये हर वर्ष की तरह योग प्रचार के लिये गये। सद्गुरु जी की अपार कृपा से मेरा परिवार भी साथ था। अमेरिका से सद्गुरु जी के दामाद श्री मोहन लाल खेतरपाल जी इस वर्ष भी हमारे साथ थे।

6 जून को सद्गुरु जी के साथ हम सब भक्त समाज कारों, तथा दो कैन्टरों (मिन्नी ट्रक) से होशियारपुर से शिमला के लिये रवाना हुये। शिमला में श्री रघुबीर सिंह मेहता जी के घर सत्संग का आयोजन था। यहां पर श्री निर्मल सिंह, सोमनाथ आदि दूसरे नौजवान बच्चों ने योग आसनों का प्रदर्शन किया।

8 जून को मेरा जन्म दिन था। मैंने उस दिन सद्गुरु जी व गुरुमाता जी से आशीर्वाद लिया। उसके पश्चात् सद्गुरु जी टिक्करी गांव (रोहडू) के लिये रवाना हुये। शाम को ठाकुर शमशेर सिंह जी के यहां टिक्करी गांव पहुंचे। सड़क पर ही लगभग 400 भक्तों ने सद्गुरु जी का भव्य स्वागत किया। मैंने देखा सड़क पर ही 35-40 भक्तों का ध्यान लग गया और वह भक्त सड़क पर ही लेट गये। कई भक्त तो सद्गुरु जी के चरणों

में लेट गये तथा चरणों से हटने का नाम ही नहीं ले रहे थे। सद्गुरु जी ने उनके आवेश को बड़ी मुश्किल से कम किया और अपने पांव छुड़ाये। बहुत से भक्त तो सद्गुरु जी व गुरुमाता जी के संग भक्ति में मग्न थे, जैसे कृष्ण के संग गोपियां। बहुत से भक्त प्रभु ध्यान में नाच रहे थे।

यहां पर भक्तों का उत्साह तथा सेवा भाव देखने को बनता था। ऐसा नजारा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा प्रतीत होता था कि जैसे सद्गुरु जी ने सारा गांव ही प्रभु भक्ति में रंग दिया है। जो गांव वासी मिलता ऐसा लगता की वह किसी विशेष मस्ती में घूम रहा है। सारा वातावरण आनंदित तथा भक्तिमय लग रहा था।

यहां दो दिनों के सत्संग में 350 से भी अधिक भक्तों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ली। यहां मैंने एक 12-13 वर्ष के लड़के को देखा जो लगभग बावलों की तरह रो रहा था। मैंने उससे पूछा कि तू क्यों रो रहा है। उसने मुझे बताया कि प्रभु जी मेरे पास आते हैं तथा फिर अलोप हो जाते हैं मुझे मिलते नहीं। इस लिये मैं रो रहा हूं। वह लड़का प्रभु जी के वैराग्य में बहुत रो रहा था।

दोपहर को सद्गुरु जी को सत्संग के लिये यहां से कुछ

दूर धम्मबाड़ी स्कूल में जाना था। जो टिक्करी से लगभग आधे घण्टे का रास्ता था। जब सब भक्तों के साथ वह लड़का भी कैन्टर में बैठने लगा तो ड्राईवर ने उस को गाड़ी में नहीं बिठाया। ड्राईवर ने कहा यह लड़का बावलों की भान्ति हरकतें कर रहा है कही रास्ते में ही न गिर जाये। उस लड़के ने कहा अच्छा मैं कैन्टर से भी पहले पहुंच जाऊंगा। जब कैन्टर धम्मबाड़ी पहुंचा तो वह लड़का पहले से ही वहां खड़ा था। यह सब देख कर ड्राईवर बड़ा हैरान हुआ। जब से सद्गुरु जी टिक्करी पहुंचे थे वह लड़का ध्यान में ही मस्त था। सद्गुरु जी का धम्मबाड़ी में लोगों ने बड़ा भव्य स्वागत किया। सद्गुरु जी ने अपनी योग अमृत वाणी से वहां के लोगों को निहाल किया। श्री निर्मल सिंह जी व उनके साथियों ने हठ योग के आसनों का प्रदर्शन भी स्कूल के बच्चों को दिखाया। इस गांव से आगे कोई और गांव नहीं है। धम्मबाड़ी चढ़गांव का आखिरी गांव है। हम सद्गुरु जी के साथ 11 जून को टिक्करी से चढ़गांव पहुंचे। यहां श्री नरेश जी के कुछ समय सत्संग करने के पश्चात् सद्गुरु जी उसी दिन कलोटी गांव श्री यशवंत सिंह ठाकुर जी के यहां पहुंचे। यहां पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष अधिक प्रभु भक्त थे। यहां बहुत लोगों ने नेती, आसन आदि निर्मल सिंह जी व सोमनाथ

जी से सीखे। जो दो बूढ़े व्यक्ति पिछले वर्ष सन् 1994 में यहां सद्गुरु जी से मिलने आये थे तथा उस समय उनकी हालत बहुत ही दयनीय थी। अब मैंने उनको स्वस्थ तथा साफ सुथरे कपड़ों में देखा। वह सत्संग में आये और सद्गुरु जी से मिले। उनमें से एक ने मुझे बताया कि उसकी अवस्था तो मरने जैसी हो गई थी। उसको तो घर वालों ने ज़मीन पर लिटा दिया था परन्तु सद्गुरु जी की कृपा से वह बच गया। आज वह नियमित रूप से आसन करता है और बिल्कुल स्वस्थ है। सद्गुरु जी ने पिछले वर्ष की भान्ति ही हाथ उठा कर उनको वैसा ही आशीर्वाद दिया।

यहां सोम नाथ जी का भाई कुछ लड़कों के साथ आया हुआ था। जो केवल सैर करने के लिये ही आये थे। उनमें से एक लड़के ने इस ढंग से बात की जैसे वह योग की निंदा कर रहा है। वह अगले दिन बस द्वारा कुछ भक्तों के संग आगे गये तो बस खड्ड में गिर गई। प्रभु जी के किसी भी भक्त को कोई चोट नहीं लगी। दिलबाग सिंह जो सद्गुरु जी की वीडियो फिल्म बनाता था उसी बस में था। वह कला बाजी खा कर कैमरे सहित खड्ड में गिर गया। परन्तु उसको कोई चोट नहीं आई थी। कैमरा भी टूटने से बच गया था। केवल उस नौ जवान को चोट लगी थी जिसने योग की निंदा की थी। उस का दांत

तथा जबाड़ा टूट गया था। सद्गुरु जी ने अपने से 2500 रुपये देकर उसे शिमला हस्पताल में भेजा था।

यशवंत सिंह व उसकी धर्म पत्नी बड़े ही प्रभु भक्त हैं। प्रभु जी के प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा है। यशवंत जी की पत्नी का बहुत ध्यान लगता है। जब वह प्रभु ध्यान में बैठती है तो उस का आसन जमीन से ऊपर उठ जाता है।

सन् 1997 ई० की घटना है। चढ़गांव में बादल फटा था जिससे गांव में बहुत भारी नुकसान हुआ था। देखते ही देखते कई लोग पानी में बह गये थे। जब यह घटना हुई उससे कुछ मिनट पहले यशवंत जी चढ़गांव में अपने दफ्तर के लोगों को वेतन देने जा रहे थे। उसी समय यशवंत जी को आगे मत जाओ'' की आकाशवाणी हुई। यशवंत जी को ऐसा लगा जैसे सद्गुरु जी ने आवाज़ दी है। परन्तु वह आगे रैस्ट हाऊस की ओर बढ़ता गया तभी उसके पीछे कन्धे पर किसी ने हाथ रखा। उसने पीछे देखा तो सद्गुरु जी थे। सद्गुरु जी ने कहा अपने साथियों सहित यहां से जल्दी भाग जाओ और सद्गुरु जी अलोप हो गये। उसने तुरन्त रैस्ट हाऊस में बैठे लोगों को आवाज़ लगाई कि यहां से जल्दी निकलो। वे सब भाग कर कुछ ही दूरी पर पहुंचे ही थे तभी जोर से बादल फटा और उनके देखते ही देखते रैस्ट हाऊस पानी में बह गया और आस-पास

भी भारी नुक्सान हुआ। वे सब सद्गुरु जी की कृपा से बच गये। योगी सद्गुरु जी के करोड़ों हाथ होते हैं। वह अपने भक्तों की स्वयं रक्षा करते हैं। इसलिये सद्गुरु जी की कृपा का वर्णन करना अति कठिन है। सद्गुरु जी की शरण में रहने वाले शिष्य की सद्गुरु जी पग-पग पर रक्षा करते हैं। आज यशवंत जी प्रभु जी की योग विद्या का प्रचार व प्रसार कर रहे हैं।

13 जून को कलोटी से सद्गुरु जी के साथ हम सब रोहड़ू श्री शेर सिंह ठाकुर जी के यहां शाम को पहुंचे। उस समय बड़ी जोर से आंधी तूफान आ गया और चारों ओर अन्धेरा छा गया। वर्षा भी होने लगी। तभी बिजली चली गई। उस समय शेर सिंह जी अकेले ही भक्तों के लिये इन्तजाम कर रहे थे। टैन्ट भी आंधी से गिर गया। तभी मैंने अपने बेटे को बाज़ार से मोमबत्तियां व माचिसें लाने को कहा। उसी समय मुझे गुरुमाता जी ने बुलाया और पूछा यहां भक्तों के विश्राम की क्या व्यवस्था है। मैंने शेर सिंह जी से पूछ कर गुरुमाता जी को बताया कि वह अभी इन्तजाम कर रहे हैं। मुझे गुरुमाता जी ने कहा तुम जाओ और आस-पड़ोंस में सब भक्तों का ठहरने का प्रबन्ध करो। बाहर वर्षा हो रही थी तथा तेज़ हवा भी चल रही थी। मैंने गुरुमाता जी से बेनती की कि मुझे यहां कौन जानता है। मैं कैसे इन्तजाम करूंगा ? मुझे गुरु माता जी ने फिर कहा जाकर

यत्न करो सब इन्तजाम हो जायेगा। मैं गुरुमाता जी की आज्ञा से पड़ोसियों के यहां पहुंचा। मैंने एक पड़ोसी के कमरे में दस्तक दी। वहां दो व्यक्ति बैठे बीड़ी पी रहे थे। मैंने उनसे नमस्ते करते हुये कहा हम यहां योगी सद्गुरु जी के साथ सत्संग करने आये हैं। इतना सुनते ही उन्होंने तुरन्त बीड़ी बुझा दी और बड़े सत्कार से मुझे कहने लगे ये कमरे की चाबी है आप इसे रखो। मैंने उनसे कहा हमें दो दिनों के लिये कमरा चाहिये। वह बोले कोई बात नहीं हम अपने दोस्त के यहां चले जायेंगे। आप कमरे की चाबी रखें और इतना कह कर वह दोनों व्यक्ति कमरे से बाहर चले गये। मैं बड़ा हैरान हुआ। सारा घर का सामान उसी तरह छोड़ कर चले गये। कभी मैं चाबी को देखता कभी कमरे को। कमरे में 8-10 भक्तों को आराम के लिये बिठा दिया। इसी तरह मैं चार-पांच घरों में गया और मुझे पांच और कमरे मिल गये। मैंने सब कुछ आकर गुरुमाता जी को बताया। गुरुमाता जी ने कहा सब कुछ प्रभु जी ही करवाते हैं। फिर कुछ समय पश्चात् वर्षा रुक गई और सब कुछ ठीक-ठाक हो गया।

यहां गुरुमाता जी ने मुझे बताता कि एक भक्त ने समाधि में बताया कि प्रभु जी ने संसार के कल्याण हेतु अन्नत शक्तियों के साथ अवतार लिया है। प्रभु जी ने 92 युगों के पश्चात् ऐसी शक्तियों के साथ अवतार लिया है। मैंने गुरुमाता जी से पूछा कि

संसार में इतनी शक्तियों की प्रभु जी को क्या आवश्यकता है ? तभी पास बैठे सद्गुरु जी ने बताया कि पहले युगों में इतने पाप नहीं थे जितने इस कलयुग में हैं। इसलिये प्रभु जी अनन्त कलायों के साथ अवतीर्ण हुये हैं। द्वापर में प्रभु जी ने जब भगवान कृष्ण रूप में अवतार लिया था तो महाभारत के युद्ध में लगभग 18 अक्षौहिणी सेना मारी गई थी। यदि इस युग में युद्ध हुआ तो भंयकर नाश होगा। क्योंकि आज के युग में अटम बंम, हाईड्रोजन बंम जैसे भयानक अस्त्र हैं। जिस के प्रयोग से करोड़ों लोगों की मृत्यु हो सकती है। इसलिये प्रभु जी योग विद्या के द्वारा ही इस संसार को सुधारने का यत्न कर रहे हैं। प्रभु जी ऐसे भयानक युद्धों को अपनी शक्ति से ही टाल सकते हैं।

14 जून को सत्संग की समाप्ति हुई। 15 जून को हम सब सद्गुरु जी के साथ शिमला श्री रघुबीर सिंह मेहता जी के घर पहुंचे। यहां एक दिन का सत्संग हुआ और 16 जून को हम सब वापिस होशियारपुर आश्रम आ गये।

इस योग प्रचार में बहुत से लोगों ने सद्गुरु जी से अपनी बिमारियों के उपचार पूछे तथा बहुत से भक्तों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ली। सद्गुरु जी बताते हैं कि जो भक्त सद्गुरु की शरण में आ जाते हैं उनकी रक्षा सद्गुरु जन्म-जन्म तक करते हैं। हमारे साथ अमेरिका से श्री मोहन लाल जी आये थे। उन्होंने सारे

कार्यक्रम की वीडियो फिल्म बना कर अपने साथ अमेरिका ले गये। सद्गुरु जी की कृपा की महिमा मैं अपनी तुच्छ लेखनी से वर्णन नहीं कर सकता। सद्गुरु जी ने बहुत से संस्कारी भक्तों को पहली बार मिलने से ही ध्यान में बिठा दिया। कई भक्त तो मैंने देखे अभी सद्गुरु जी के कमरे में प्रवेश ही करते थे तो जोर से जमीन पर गिर जाते थे। ऐसा लगता था कि उनको जरूर चोट लगी होगी परन्तु ऐसा कुछ नहीं होता था। उनकी जोर-जोर से भस्त्रिका चलती और वह आनंदित हो कर सद्गुरु जी के पांव ही नहीं छोड़ते थे। सद्गुरु जी कहते हैं कि हर संसारी जीव में श्रद्धा-भक्ति का बीज होता है। परन्तु वह बीज सोया हुआ है। सद्गुरु जी के पास जब संस्कारी जीव पहुंचता है तो वह श्रद्धा का बीज फूट पड़ता है और अंकुरित होने लगता है। यहीं से शुरू होती है प्रभु भक्ति।

सन् 1996 ई० की यात्रायें

शिमला यात्रा

सद्गुरु जी 5 जून 1996 से 15 जून 1996 तक शिमला तथा हिमाचल के कोटगढ़ इलाके में योग प्रचार के लिये गये। सद्गुरु जी की कृपा से मुझे भी सपरिवार साथ जाने का सुअवसर मिला। होशियारपुर से बहुत से भक्त कैन्टर तथा कारों से सद्गुरु जी के साथ गये।

5 जून को चण्डीगढ़ कश्मीर भवन में सत्संग के पश्चात् सद्गुरु जी 6 जून को परवानू पहुंचे। श्री भूपिन्द्र जैन के यहां सत्संग हुआ। यहां के लोगों ने योग में बहुत रुचि दिखाई। यहां पर हठ योग का प्रदर्शन हुआ तथा बहुत से लोगों ने सद्गुरु जी से अपनी बिमारियों के विषय में उपचार पूछे।

8 जून को सद्गुरु जी ने शिमला के लिये प्रस्थान किया। 8 जून को मेरा जन्म दिन था। मैंने सद्गुरु जी से तथा गुरुमाता जी से आशीर्वाद लिया। रास्ते में कण्डा घाट के साथ बगनाघाट में कुछ समय के लिये सत्संग हुआ। शाम को सद्गुरु जी शिमला पहुंचे। शिमला में श्री पृथ्वी चन्द धीमान के यहां सत्संग था। सद्गुरु जी व गुरुमाता जी का शिमला वासियों ने बड़ा भव्य स्वागत किया।

श्री धीमान जी ने अपने घर में काफी बड़ा सत्संग हाल बनवाया था। जब हाल बन कर तैयार हुआ तो श्री धीमान जी ने गुरुमाता जी को कहा शिमले में सत्संग हमारे घर रखे हमने बहुत बड़ा हाल बनाया है। आप होशियारपुर के सभी भक्तों को साथ लाना। ये शब्द श्री धीमान जी ने अहंकार से कहे थे। गुरुमाता जी ने मुस्कुराते हुये पूछा कि ठेकेदार जी बहुत बड़ा हाल बनवाया है क्या श्री धीमान जी ने फिर गुरुमाता जी को कहा, जी हां बहुत बड़ा हाल बनवाया है। ये शब्द धीमान जी ने फिर अभिमान से कहे थे। तब गुरुमाता जी केवल मुस्कुरा दी थी। 8 जून को सत्संग में धीमान जी के घर बहुत भक्त आ गये। सत्संग हाल में जरा भी जगह नहीं थी। भक्त जन हाल के बाहर खड़े थे। भक्तों की भीड़ देखकर श्री धीमान जी ने छत पर मन्दिर बनाने की व्यवस्था की। छत पर टैन्ट लगवा दिये। छत भी भक्तों से भर गई। अब छत पर भक्तों की काफी भीड़ हो गई। श्री धीमान जी मन ही मन सोचने लगे। कही मेरी छत का लैंटर भी ना गिर जाये। मन ही मन प्रभु जी को बेनती करने लगे। तब गुरुमाता जी को अभिमान में कहे शब्द याद आये। तो मन ही मन गुरुमाता जी से क्षमा याचना करने लगे। उन्हें अपनी गलती का अहसास हुआ। सद्गुरु जी की कृपा से सत्संग ठीक ठाक हो गया।

10 जून को सद्गुरु जी शिमला से शथला के लिये रवाना हुये। रास्ते में श्री पृथ्वी सिंह जी ने वीरगढ़ स्कूल के बच्चों का हठ योग का प्रदर्शन रखा हुआ था। सद्गुरु जी कुछ समय के लिये वीरगढ़ स्कूल में बच्चों के साथ रुके। यहां पर स्कूल के शिक्षकों सहित बच्चों व गांव के लोगों ने सद्गुरु जी का बड़ा भव्य स्वागत किया। निर्मल सिंह जी ने भी हठ योग का प्रदर्शन किया। सद्गुरु जी शाम को शथला श्री सुन्दर जिष्टू जी के निवास स्थान पर पहुंचे। श्री सुन्दर जिष्टू जी का निवास स्थान सड़क से 3 किलो मीटर की दूरी पर है सद्गुरु जी व गुरुमाता जी पैदल ही पहाड़ी रास्तों से होते हुये जिष्टू जी के निवास स्थान पर पहुंचे। यहां पर बहुत भक्तों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ग्रहण की। गांव वासियों ने अपनी बिमारियों के विषय में भी सद्गुरु जी से उपाय पूछे।

12 जून को सद्गुरु जी शथला से दलान गांव पहुंचे। यहां कुछ देर सत्संग के पश्चात् सद्गुरु जी बड़गांव गांव पहुंचे यहां श्री बंसी लाल जी के निवास स्थान पर सत्संग हुआ। 14 जून को बड़गांव से सद्गुरु जी शिमला पहुंचे 15 जून को सद्गुरु व गुरुमाता जी होशियारपुर वापिस पहुंचे।

होशियारपुर वापसी के समय मैंने सद्गुरु जी से बेनती

की कि श्री योग महा दिव्य रामायण के सभी खण्डों का एक महान ग्रंथ बनना चाहिये तभी सद्गुरु जी ने कहा कि समय आने पर एक महान ग्रंथ बन जायेगा। अभी समय नहीं आया है। मैंने फिर बेनती की कि प्रभु जी की रामायण का ग्रंथ क्या सब से बड़ा ग्रंथ होगा ? सद्गुरु जी ने बताया कि सब से बड़ा ग्रंथ महाभारत है जिस के लगभग एक लाख श्लोक (पद्य) हैं।

सद्गुरु जी द्वारा रचित श्री योग महा दिव्य रामायण के सभी ग्रन्थों की चौपाई व दोहों की गनणा की जिसमें कुल चौपाई के 41130 पद्य हैं तथा दोहों के 11813 पद्य हैं। कुल 52943 पद्य हैं। श्री योग महा दिव्य रामायण के प्रत्येक खण्डों के पद्यों की गनणा निम्न प्रकार है :

खण्ड	चौपाई (पद्य)	दोहे (पद्य)
1.	6641	1366
2.	10956	1861
3.	3936	887
4.	4029	954
5.	4106	1003
6.	4339	738
7.	2838	434

8.	---	2420
9.	1446	678
10.	1674	984
11.	1165	488
	41130	11813

सत्संग के दौरान बहुत से लोगों ने सद्गुरु जी से योग के आसन सीखे तथा दीक्षा ग्रहण की। सत्संग के दौरान सद्गुरु जी थानाधार कुछ समय के लिये एक भक्त के घर रुके। जिस को आंखों की तकलीफ थी। उस की आंखों की पलकें ऊपर नहीं उठती थी। जिस कारण उस की आंखें बन्द रहती थी। जब देखता था तो अपने हाथ से पलक उठा कर देखता था। सद्गुरु जी ने उसे दूध नेती सिखाई जिससे उस भक्त की आंखों की पलकें ठीक हो गईं। सद्गुरु जी की कृपा से उस की आंखें तो ठीक हुई साथ ही साथ उसे प्रभु भक्ति भी मिल गई।

हमीरपुर यात्रा

सद्गुरु जी व गुरुमाता जी 13 सितम्बर 1996 से 17 सितम्बर 1996 तक योग प्रचार के लिये हमीरपुर जिले में टौनी देवी, गुआरडू तथा सीसवा गये। सौभाग्य से मैं भी सद्गुरु जी के साथ था। 13 सितम्बर को सद्गुरु जी श्री शक्ति चन्द पठानिया के निवास स्थान टौनी देवी पहुंचे। वहां पर बहुत लोगों ने हठ

योग से लाभ उठाया तथा बहुत भक्तों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ग्रहण की। इसी दिन शाम को सद्गुरु जी मास्टर नसीब सिंह के निवास स्थान गुआरडू पहुंचे। वहां पर तो जैसे सारा गांव ही प्रभु भक्त बन गया। भक्तों की बहुत भीड़ थी। सद्गुरु जी के पहुंचते ही बहुत भक्तों की ध्यान समाधि लग गई। सब समाधित वाले भक्तों को सम्भालना भी मुश्किल हो गया क्योंकि बहुत से प्रभु भक्त आवेश को नियंत्रित नहीं कर पा रहे थे। यहां लगभग 40 से 50 भक्तों का ध्यान लग गया।

अगले दिन सद्गुरु जी के पास दीक्षा लेने के लिए बहुत लोग आये। यहां एक विशेष बात यह हुई कि दोपहर को जोरो से वर्षा आ गई और सारा टैन्ट गीला हो गया। तभी सोमनाथ जी ने भजन गाना शुरू कर दिया। उसी समय 30 से 35 भक्तों का ध्यान लग गया तथा सारे ध्यानी भक्त वर्षा में ही नाचते लगे। जब तक वर्षा नहीं रुकी भक्त नाचते ही रहे।

उसी समय एक नौ जवान लड़का जिस का नाम देव राज था जोर-जोर से रोता हुआ सद्गुरु जी के पास आया तथा सर पटक-पटक कर कहने लगा सद्गुरु जी मुझे माफ कर दो। वह अपने आप को सम्भाल नहीं पा रहा था। बस जोर-जोर से रोते हुए बार-बार कह रहा था मुझे माफ कर दो।

जब देव राज कुछ शान्त हुआ तो मैंने उससे पूछा क्या बात है तू रो क्यों रहा है तथा बार-बार माफी क्यों मांग रहा है। उसने कहां मैं मास्टर जी के घर योग आसन सीखने रोज आता हूं तथा योग आसनों में विश्वास रखता हूं। परन्तु रविवार को मास्टर नसीब सिंह जी के यहां सत्संग भी होता है तथा कई भक्तों का ध्यान लग जाता है तथा वह गिर जाते हैं। मैं उस बात को नहीं मान कर के, कहता यह सब ढोंग है। योग समाधि की निंदा भी करता। परन्तु आज जब सद्गुरु जी आये और मेरी ध्यान समाधि लग गई। सद्गुरु जी की कृपा से मुझे शिव भगवान के साक्षात दर्शन हुये। सद्गुरु जी व गुरुमाता जी साक्षात शिव-पार्वती का रूप हैं। इसलिये मैं सद्गुरु जी से बार-बार माफी मांग रहा था तथा ध्यान अवस्था मुझ से बदार्शत नहीं हो रही थी। मेरा सिर बड़े जोर से दर्द कर रहा था। सद्गुरु जी की अपार कृपा से मुझे शिव भगवान के दर्शन हुये तथा योग का ज्ञान भी हुआ। अब देव राज प्रभु जीं का भक्त है आश्रम की सेवा करता है।

15 सितम्बर को सद्गुरु जी सीसवा श्री रोशन लाल चौहान के निवास स्थान पर पहुंचे। गांव में पहुंचने से पहले वर्षा शुरू

हो गई। गांव के बाहर तथा आस-पास बहुत जोर से वर्षा हो रही थी। परन्तु गांव के अन्दर वर्षा नहीं हो रही थी।

विक्रमजीत सिंह (विक्की) चौहान जो सद्गुरु जी को पहली बार 18 नवम्बर सन् 1994 को भोटा में श्री हेमराज जी के निवास स्थान पर मिला था। उस समय सद्गुरु जी ने कहा था होनहार विरवान के होत हैं चिकने पात। इसी विक्की नौजवान के लिये कहे थे। जो रोशन लाल चौहान जी का लड़का है। गांव के लोगों ने बड़े उत्साह के साथ सत्संग किया तथा हठ योग के आसनों की शिक्षा ली। जब सत्संग की समाप्ति होने लगी तो सद्गुरु जी ने श्री रोशन लाल जी को दो शब्द बोलने को कहा। चौहान जी ने कहां मां बाप बच्चों को अच्छी शिक्षा देते हैं तथा उनका मार्ग दर्शन करते हैं। मैं अपने बच्चों का बड़ा अभारी हूं जिन्होंने मुझे योगी सद्गुरु जी से मिलवाया तथा सद्गुरु जी की कृपा से यहां सत्संग हुआ। मैं शराब व धूम्रपान का सेवन भी करता था जो बच्चों की प्रेरणा से छोड़ दी। चौहान जी बोलते हुये भाव विभोर हो गये तथा रोने लगे। प्रभु जी ऐसे बच्चे सब को दें। विक्की तथा उस का भाई राजेन्द्र सिंह चौहान अब आश्रम की बड़ी श्रद्धा से सेवा करते हैं। सद्गुरु जी अपने

शिष्यों का कल्याण तो करते हैं साथ में उनके परिवार का भी कल्याण करते हैं। सद्गुरु जी की दयालुता का कहीं भी पारावार नहीं है।

मण्डी यात्रा

22 अक्तूबर से 30 अक्तूबर सन् 1996 ई० को सद्गुरु जी का बरमाणा, देवधार (मण्डी), पण्डोह, सुन्दर नगर, बैरी मानर, बिलासपुर तथा गांव कोकला (बिलासपुर) योग प्रचार के लिये कार्यक्रम था।

सद्गुरु जी की कृपा से होशियारपुर तथा लिद्धड़कला से बहुत भक्त कारों तथा कैंटर में गये। इस योग प्रचार के कार्यक्रम में बहुत से लोगों ने सद्गुरु जी से दीक्षा ग्रहण की तथा बहुत से लोगों ने अपनी बिमारियों के हठ योग से ठीक होने के उपाय पूछे।

सुन्दर नगर में श्री चुन्नी लाल डोगरा जी के सहयोग से B.B.M.B. कालोनी में सत्संग का आयोजन हुआ। सद्गुरु जी से सुन्दर नगर का एक डाक्टर जो यहां सीनियर मैडिकल आफिसर नियुक्त था। अपनी बेटी के साथ मिलने आया। बेटी बी. ए. में पढ़ रही थी तथा उस की आंखें सूज कर बाहर सिर पर आ गई थी। देखने में वह लड़की सुन्दर थी परन्तु आंखें बाहर आने के

कारण उस की शक्ल डरावनी हो गई थी। सद्गुरु जी ने उनको सत्संग के पश्चात् मिलने को कहा और सद्गुरु जी ने मुझे कहा डाक्टर साहिब को कहना कि सुन्दर नगर से बाहर मुख्य सड़क पर मिलें। जब हम शहर से बाहर पहुंचे तो डाक्टर साहिब पहले ही मुख्य सड़क पर अपनी बेटी के साथ खड़े थे। डाक्टर साहिब ने सद्गुरु जी को बताया कि मेरी लड़की को कुछ वर्ष पहले आंखों में दर्द हुआ था। आंखों की दवा शायद ईन्फैक्शन कर गई। जिस के कारण आंखें सूज कर बाहर आ गईं। लड़की का अमेरिका तक इलाज करा चुका हूं परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। सद्गुरु जी ने लड़की को देख कर कुछ आसन तथा कुछ हठ योग की क्रियाएं लिखकर दी तथा कहा कि डोगरा जी से सीख लें तथा होशियारपुर आश्रम भी आना।

जब उस लड़की की हालत देखी तो मेरा मन भर आया। रास्ते में मैंने सद्गुरु जी से बेनती की कि इस लड़की को ठीक कर दो। सद्गुरु जी ने कहा तू एकदम दयालु हो जाता है। मैंने फिर बेनती की मद्रास में स्वामी मुलखराज जी ने अन्धों को आंखें दें दी थी। इस लड़की की तो आंखें हैं। आप कृपा करके इसे ठीक कर दे। बेचारी लड़की के जीवन का सवाल है।

सद्गुरु जी ने कहा हम ने तो आसनों के द्वारा कृपा कर दी है जैसे-जैसे आसन करेगी ठीक हो जायेंगी। परन्तु वह आसन करेगी नहीं क्यों कि उनको विश्वास नहीं है। ना ही ये लोग आश्रम आयेंगे। क्योंकि डाक्टर साहिब ने कुछ ऐसे कर्म किये हैं जिन का फल बच्चों को भी भुगतना पड़ रहा है ये कर्म ही आश्रम तक नहीं आने देंगे। भगवान श्री कृष्ण जी ने भी ऊधव को कहा था ऊधव कर्मन की "गत कही ना जाये"।

श्री सोहन लाल पठानिया जी गांव गरली तहसील सरकाघाट जिला मण्डी के रहने वाले हैं। उनके निवास स्थान पर सत्संग था। पठानियां जी के घर लम्बा खण्ड का सफर तह कर के सभी भक्त पहुंचे। उन का घर गांव से दूर सड़क के किनारे अकेला था। घर के आंगन में एक बहुत बड़ा पीपल का वृक्ष था। शाम को हल्की-हल्की वर्षा भी होने लगी। यहां का वातावरण बड़ा ही शांत था। जब शाम को सद्गुरु जी शौच निवृत्ति के लिये गये तो उस शान्त वातावरण में तेज़ ठण्डी-ठण्डी हवायें भी चलने लगी तथा आकाश में काली घटाओं के कारण अन्धेरा हो गया। यहां का वातावरण बड़ा अज़ीब सा था।

गुरुमाता जी अपने कमरे में अकेली थी। उस समय मुझे

गुरुमाता जी कुछ ज्ञान की बातें बताने लगी। उस समय मुझे ऐसा महसूस हुआ कि गुरुमाता जी से दिव्य तरंगें (शक्ति) आ रही है जिससे मेरे शरीर की प्राणनाड़ियां प्रभावित हो रही हैं अर्थात् उनमें तीव्रता आ रही है। मन भावुक हो रहा है तथा आंखें नम होती जा रही हैं। मैं अपनी भावुकता को गुरुमाता जी से छुपाने का यत्न कर रहा था। जब मन अधिक भावुक हो गया तो मैं कमरे से बाहर जाने लगा परन्तु गुरुमाता जी ने रोक लिया। कुछ समय पश्चात् भावुकता अधिक बढ़ गई तो मैं यह कह कर कमरे से बाहर आ गया कि सद्गुरु जी आने वाले हैं।

जब मैंने सद्गुरु जी से इस विषय से बात की तो सद्गुरु जी ने बताया कि योगी तथा सन्त महापुरुषों से दिव्य तरगें (शक्ति) सभाविक निकलती रहती है। जिन लोगों की प्राण नाड़ियां जागृत होती हैं उन्हें योगी महापुरुषों की दिव्य शक्ति का आभास होता रहता है तथा उन लोगों को उसे शक्ति का विशेष लाभ भी होता है।

यहां पठानिया जी के घर मुझे भक्त श्री ओंकार सिंह जी मिले। उन्होंने मुझे अपने जीवन काल की एक घटना का वर्णन करते हुये बताया कि सन् 1992 ई० में सद्गुरु जी के साथ गांव

पीपटी (रामपुर) में सत्संग में गया। वहां ओंकार जी ने हठयोग के आसनों का बड़ा अच्छा प्रदर्शन किया। उस के पश्चात् ओंकार जी तीसरी मंजिल की छत के किनारे खड़े हो गये अचानक उनका संतुलन बिगड़ गया तथा वह छत से सिर के बल नीचे गिर गये। वह अचेत हो गये तथा उनका शरीर अकड़ गया। यह सब देख कर कुछ भक्त जन रोने लगे तभी कुछ भक्त ओंकार जी को उठा कर सद्गुरु जी के पास ले आये। सद्गुरु जी ने ओंकार जी के मुख में चरणामृत डाला तो वह तुरन्त उठ कर बैठ गया। उसके पश्चात् गुरुमाता जी ने ओंकार जी को हल्दी वाला गर्म-गर्म दूध पिलाया। फिर सद्गुरु जी ने ओंकार के सिर की चोट की पट्टी करवाने के लिये हस्पताल भेज दिया।

ओंकार जी ने बताया कि सद्गुरु जी की अपार कृपा से मुझे जीवन दान मिला। सद्गुरु जी की कृपायों का वर्णन करना अति कठिन है।

सन् 1997 ई० की यात्रायें

बरनाला यात्रा

अप्रैल 1997 ई० को रामनवमी के पर्व पर सद्गुरु जी ने योग प्रवचनों में कहा कि योगी यदि किसी व्यक्ति पर कृपा करते हैं तो उसे भी जवाब देना होता है।

रामनव्मी के पर्व की समाप्ति पर 18 अप्रैल को योग प्रचार के लिये बरनाला कार्यक्रम था। बरनाला में मित्तल परिवार के यहां सत्संग था। रास्ते में मैंने सद्गुरु जी से बेनती की कि कल आपने योग प्रवचनों में कहा था कि योगी को भी जवाब देना पड़ता है। मैंने आगे कहा योगी जब प्रभु रूप ही हो जाते हैं तो योगी महापुरुषों ने किस को जवाब देना है। सद्गुरु जी ने कहा कि योगी यदि किसी गरीब को धन, बेऔलाद को औलाद तथा मृत्यु शय्या पर पड़े जीव को जीवन दान भी दे तो कोई बात नहीं। परन्तु योगी किसी को समाधि देता है तो उसके लिये अधिकारी होना जरूरी है। संसारिक वस्तुएं योगी दे सकता है। परन्तु समाधि केवल अधिकारी को ही देते हैं। योगी किसी को जवाब देहि नहीं है। परन्तु अपनी आत्मा को जवाब देहि है। भाव यह कि यदि कोई अधिकारी नहीं है तो उसको कोई योगी समाधि नहीं देता परन्तु भौतिक वस्तुएं योगी के हाथ की मैल होती हैं।

शिमला यात्रा

सद्गुरु व गुरुमाता जी हर वर्ष की तरह योग प्रचार के लिये 6 जून 1997 से 15-6-1997 तक चण्डीगढ़, शिमला, शौकड़ी, शथला आदि के लिये गये। सौभाग्य से मैं तथा मेरा परिवार भी सद्गुरु जी के साथ गये।

8 जून को मैंने शिमला में सद्गुरु जी व गुरुमाता जी से अपने जन्म दिन का आशीर्वाद लिया। शिमला में सद्गुरु जी को एक सज्जन जिस का नाम राये सुख था, डोडा क्वार से मिलने आया। उसकी उम्र लगभग 48 वर्ष थी। उसकी टांगें किसी कारण वश खराब हो गई थी और वह 14 वर्षों से चलने में असमर्थ था। जब ठाकुर शमशेर सिंह जी डोडा क्वार योग प्रचार के लिये गये तो उनकी मुलाकात राये सुख से हुई। ठाकुर जी ने उन्हें आसन सिखाये। सद्गुरु जी की कृपा से वह शीघ्र ठीक हो गया तथा अपने पांव पर चलने योग्य हो गया। राये सुख गरीब था तथा टांगों की वजह से वह अपनी आजीविका नहीं कमा सकता था। डोडा क्वार टिकरी से लगभग 35 कि.मी. दूर है तथा वहां जाने के लिये पैदल ही रास्ता है। वह समुद्र तल से लगभग 9000 फुट की ऊंचाई पर है। ठाकुर शमशेर जी यहां हर महीने पैदल योग प्रचार के लिये जाते थे। रास्ते में वह

13000 फुट की ऊंचाई को पार करके गांव पहुंचते थे। जब राये सुख को पता लगा कि सद्गुरु जी जून में शिमला आने वाले हैं तो उस की इच्छा सद्गुरु जी के दर्शन करने की हुई। उस ने सड़क पर मजदूरी करके कुछ पैसे कमाये और शिमला पहुंचा। सद्गुरु जी से मिलकर राये सुख गदगद हो गया। अब वह अपने पैरों पर चल सकता है।

शथला से जब हम शिमला वापिस आ रहे थे तो रास्ते में मैंने सद्गुरु जी से बेनती की कि जैसे भगवान रामचन्द्र जी तथा श्रीकृष्ण भगवान जी के मन्दिर हैं तथा उन मन्दिरों में सुन्दर-सुन्दर संगमरमर की मूर्तियां स्थापित हैं। क्या हमारे प्रभु जी की भी आश्रमों में संगमरमर की मूर्तियां स्थापित होंगी ? सद्गुरु जी ने कहा जरूर होंगी। परन्तु अभी समय नहीं आया। प्रभु जी को आये हुये लगभग सौ वर्ष ही हुये हैं। इतने समय में भगवान राम चन्द्र जी तथा कृष्ण जी का प्रचार ना के बराबर था। मैंने सद्गुरु जी से फिर बेनती की कि आप समय पहले भी ला सकते हैं। मैं चाहता हूं कि कम से कम प्रभु जी की एक संगमरमर की मूर्ति आश्रम में स्थापित हो। परन्तु सद्गुरु जी यह कह कर टाल गये कि अभी समय नहीं आया।

मैंने सद्गुरु जी को कई बार प्रभु जी की मूर्ति बनवाने की बेनती की। एक दिन आश्रम में सद्गुरु जी बड़े खुश मूड़ में बैठे थे। मैंने प्रभु जी की मूर्ति बनवाने की फिर बेनती की सद्गुरु जी कुछ सोचकर कहने लगे मूर्ति कैसे बनवाओगे। मैंने सद्गुरु जी को बेनती की कि मुझे केवल आप की आज्ञा तथा आशीर्वाद चाहिये। मैं जयपुर बनवाने चला जाऊंगा। सद्गुरु जी ने सहर्ष प्रभु जी की मूर्ति बनवाने की आज्ञा दे दी। सद्गुरु जी के आशीर्वाद से मूर्ति बनवाने का काम अपने आप सरल होता गया। सद्गुरु जी अक्सर कहते हैं जब भी हम प्रभु जी का काम करने जाते हैं, प्रभु जी सदा सहाई होते हैं। सद्गुरु जी के जन्म दिवस पर, 31 मार्च सन् 1998 ई० को आश्रम में योगेश्वर प्रभु राम लाल जी की संगमरमर की मूर्ति स्थापित हुई। इस के पश्चात् प्रभु जी की मूर्ति टौनी देवी, ऋषिकेश, अमेरिका तथा सहारनपुर में भी स्थापित हुई।

जब सद्गुरु जी की कृपा होती है तो भविष्य में आने वाला समय पहले आ जाता है। जैसे ऋषि गौतम जी ने अपनी धर्म पत्नी अहिल्या के लिये एक युग का समय बदल दिया था। योगी सद्गुरु जी की शक्ति असीम है।

कुल्लु यात्रा

सद्गुरु जी का 8 नवम्बर 1997 से 13 नवम्बर 1997 ई० तक योग प्रचार के लिये दयोट, सुन्दर नगर, कुल्लू, बरमाना के लिये कार्यक्रम था। मैं भी परिवार सहित सद्गुरु जी के साथ था। होशियारपुर से बहुत से भक्त भी गये। इस सत्संग में अमेरिका से सद्गुरु जी की बेटी श्रीमती हर्ष खेतरपाल, शारदा तथा शारदा जी के पति श्री मनोहर शर्मा भी सम्मिलित हुये।

सुन्दर नगर में सत्संग बी. बी. एम. बी. के हाल में आयोजित हुआ। बी. बी. एम. बी. के प्रबन्धक भी सत्संग में आये थे। वह सद्गुरु जी से बहुत अधिक प्रभावित हुये। अब वह सेवा निवृत्त हैं और नियमित रूप से योग करते हैं।

कुल्लू में श्री आर. डी. धीमान के यहां सत्संग था। उस समय श्री धीमान जी कुल्लू के जिला कलेक्टर (D.C.) थे। धीमान साहिब का सेवा भाव देख कर सद्गुरु जी ने उन पर कृपा की और ध्यान समाधि का दान बक्शा। धीमान जी के साथ उन के दफ्तर के सुपरिडैंट भी सेवा में रत थे। सद्गुरु जी उन पर भी खुश हुये और उन पर भी ध्यान समाधि की कृपा की।

धीमान जी का जब ध्यान लगता तो उनकी भस्त्रिका बहुत जोर-जोर से चलती और वह समाधि के आवेश को सह न

सकते। कई बार तो वह समाधि में जोर-जोर से ओम् का उच्चारण करते। धीमान जी बड़े ईमानदार व सज्जन पुरुष हैं। आज उनकी ध्यान समाधि की स्थिति बहुत अच्छी है। उनकी धर्म-पत्नी का भी ध्यान लगने लगा है। सद्गुरु जी ने दोनों पति-पत्नी पर अपनी विशेष कृपा की।

धीमान जी अपनी नौकरी के सिलसिले में कई बार विदेश जाते हैं। जून सन् 2001 ई० को धीमान जी इंग्लैंड गये हुये थे। 20 जून सन् 2001 ई० को पूज्य गुरुमाता जी का शरीर ब्रह्मलीन हो गया। उस समय श्री धीमान जी ने इंग्लैंड में समाधि में देखा की गुरुमाता जी का शरीर शान्त हो चुका है तथा उनके संस्कार में आये हुये लोगों को गुरुमाता जी आकाश से आशीर्वाद दे रही हैं। प्रभु जी के अन्य भक्तों ने भी ध्यान में या स्वप्न में गुरुमाता जी का ब्रह्मलीन होना देखा।

कुल्लू से हम सभी सद्गुरु जी के साथ बरमाना आ गये। बरमाना में हर वर्ष की तरह श्री कुलदीप बोहरा जी के निवास स्थान पर सत्संग था। आज सद्गुरु जी की कृपा से उन्होंने अपने निवास स्थान को आश्रम का रूप दे दिया है। आज हर रोज सुबह बहुत से लोग हठ योग के आसन सीखने आते हैं। ये सब कुछ सद्गुरु जी की अपार कृपा से ही सम्भव हुआ।

सन् 1998 ई० की यात्रायें

कांगड़ा यात्रा

सद्गुरु जी व गुरुमाता जी का दो दिन के लिये योग प्रचार का कार्यक्रम था। यह कार्यक्रम 4 मई सन् 1998 से 6 मई 1998 ई० तक गांव रेहलू (कांगड़ा) में श्री चुहड़ू राम शर्मा जी के निवास स्थान पर था। यहां के सत्संग का कार्यक्रम श्री चुन्नी लाल डोगरा जी की प्रेरणा से आयोजित हुआ। डोगरा जी इस घर के दामाद हैं।

मेरे साथ इंग्लैंड से जे. एस. तूर आये हुये थे। जो काफी मोटे थे। वह अपना वज़न कम करना चाहते थे। उनको जोड़ों का दर्द भी रहता था इंग्लैंड में उन्होंने मोटापे और जोड़ों के दर्द का बहुत इलाज किया परन्तु कोई आराम नहीं आया। सन् 1970 ई० को श्री तूर साहिब छेहरटा आश्रम में भी गये थे। उस समय स्वामी राम प्यारा जी ने उनको प्रभु जी व स्वामी मुलखराज जी के चित्र भी दिये थे जो उन्होंने आज तक सम्भाल कर रखे थे। सद्गुरु जी ने मुझे एक बार बताया था कि जहां पर भी प्रभु जी का चित्र हो। वहां कभी ना कभी प्रभु जी जरूर अपनी कृपा करते हैं। उसी कृपा से आज तूर साहिब इंग्लैंड से सद्गुरु जी के

साथ जालन्धर से यहां सत्संग में सम्मिलित हुये। तूर साहिब ने देखा यहां प्रभु जी के भक्त नि:स्वार्थ सेवा कर रहे हैं। तूर साहिब यह सब देख कर बड़े प्रभावित हुये।

यहां सत्संग के दौरान एक विशेष बात हुई। मैं तूर साहिब के साथ छत्त पर बैठा था। तभी विजय बहिन (जो शिमला में वकील है) जी भी वहां आ गईं। तूर साहिब उस से समाधि की बातें करने लगे। उसी समय मन्दिर में सोमनाथ जी ने भजन गाना शुरू कर दिया। विजय जी भजन सुनने से इतनी भावुक हुई कि उस का ध्यान लग गया और उन्होंने पक्षी की भांती उड़ कर मन्दिर में छत्त से छलांग लगा दी। यह सब देख कर तूर साहिब बहुत हैरान हुये। यहां सत्संग में सद्गुरु जी से बहुत लोगों ने दीक्षा ग्रहण की तथा अपनी बिमारियों के विषय में भी समाधान करवाया।

शिमला यात्रा

सद्गुरु जी का 6 जून सन् 1998 ई० से 13 जून 1998 ई० तक योग प्रचार के लिये शिमला, रोहडू तथा परवाणु आदि जाने का कार्यक्रम था। हर वर्ष की तरह बहुत से भक्त सद्गुरु जी के साथ गये।

इस वर्ष हिमाचल प्रदेश में वर्षा नहीं हुई थी। जिस कारण

वहां की फसलों पर बुरा असर पड़ा था खास तौर पर सेब की फसल को। सद्गुरु जी के आगमन पर वहां भक्तों ने स्थान-स्थान पर प्रचार किया। रोहड़ू के भक्तों का योग प्रचार के प्रति बहुत उत्साह था। सद्गुरु जी की महिमा का बखान करते थकते नहीं थे। रोहड़ू के प्रभु भक्त। परन्तु श्री सिकन्दर शर्मा जब एक गांव में योगी सद्गुरु जी के आगमन का निमन्त्रण देने गये तो कुछ गांव वासियों ने कहा आप के योगी सद्गुरु जी यहां लोगों के कल्याण के लिये आ रहे हैं तो इस इलाके में वर्षा लायें तभी इस इलाके के लोगों का कल्याण होगा। कुछ गांव वासियों ने योग की निंदा भी की। तब सिकंदर शर्मा जी को बहुत दु:ख हुआ। तभी शर्मा जी के मुख से निकल गया कि सद्गुरु जी जब यहां आयेंगे तो अपने साथ वर्षा भी जरूर लायेंगे।

श्री रघुबीर सिंह वर्मा (शास्त्री जी) भी सद्गुरु जी के आगमन पर रोहड़ू इलाके के स्कूलों में जा-जा कर प्रचार कर रहे थे। उन्हें भी लोगों से वर्षा न होने के कारण योग की निंदा सुननी पड़ी। परन्तु सद्गुरु जी पर पूरा विश्वास तथा श्रद्धा थी और अपने योग प्रचार में लगे रहे और सब को यही कहते रहे कि योगी सद्गुरु जी के आने पर सब का कल्याण निश्चित् है।

जब सद्गुरु जी रोहड़ू पहुंचे तो उसी समय वर्षा होने

लगी। सद्गुरु जी के स्वागत के लिये जो भव्य तैयारियां की थी, वर्षा के कारण न हो सकी। फिर भी वर्षा में ही भक्तों ने सद्गुरु जी व गुरुमाता जी का स्वागत किया। वर्षा में ही भक्त समाज नाचने लगा तथा कई भक्तों का ध्यान लग गया और वह वर्षा में कई घण्टे नाचते ही रहे। ऐसा लगता था सारा वातावरण भक्ति मय ही हो गया है। श्री सोमनाथ जी ने वर्षा में ही सड़क पर भजन गाना शुरू कर दिया उस से कई और भक्तों की सड़क पर ही समाधि लग गई। सब भक्ति के रंग में झूम रहे थे। वर्षा भी बहुत जोरों पर थी सद्गुरु जी के पास मैं छाता लेकर खड़ा था। सद्गुरु जी अपनी कृपा का नज़ारा देख कर तथा भक्तों को भक्ति के रंग में रंगा देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। ये सब देख कर मेरा मन भी खुशी से गद-गद हो गया।

श्री निर्मल सिंह व सोमनाथ जी ने वर्षा में ही लोगों को आसनों का प्रदर्शन करके दिखाया। तीन दिन तक जोरों से वर्षा होती रही।

भक्त सिकन्दर तथा उनके सहयोगियों का वर्षा होने से मन खुशी से रो रहा था। बाहर सद्गुरु जी की कृपा से खुश हो कर इन्द्र देवता खुशी से वर्षा कर रहे थे तो भक्त सिकन्दर तथा उनके सहयोगी भक्त खुशी से अपनी आंखों से वर्षा कर रहे थे।

उनके आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। जिन गांव वासियों ने योग की निंदा की थी सद्गुरु जी से उन्होंने क्षमा याचना की और कहा हमने आप के भक्तों को बुरा-भला भी कहा परन्तु वह शान्त रहे। यहां आप के आने से भारी वर्षा हुई है हम एक बार फिर आप से क्षमा मांगते हैं। उसके पश्चात् कई गांव वासी प्रभु भक्त बन गये।

भगवान कृष्ण जी कहते हैं मेरी बान्धी भक्त छुड़ाये, भक्त की बांधी मोह से ना छूटे। भगवान व योगी सद्गुरु जी में कोई अन्तर नहीं सद्गुरु जी के शिष्यों ने कहा वह सद्गुरु जी ने पूरा कर दिया। योगी सद्गुरु की शक्ति का कोई पारा-वार नहीं है। हम सब सद्गुरु जी के साथ 14 जून सन् 1998 ई० को वापिस आ गये।

सन् 1999 ई० की यात्रायें

रिंकागपियो यात्रा

जून सन् 1999 ई० को सद्गुरु जी दूसरी बार रिंकागपिओ जाने वाले थे। मैंने सुना था कि वह इलाका काफी सुन्दर है। चारों ओर से सुन्दर-सुन्दर पहाड़ियों से घिरा है। रिकांग पिओ का रामपुर बुशहर से 6-7 घण्टे का सफर है। यहां जाने वाली सड़क काफी तंग है। हिमाचल प्रदेश का यह अन्तिम इलाका है। इससे आगे चीन की सीमा शुरू हो जाती है। मैं भी सद्गुरु जी के साथ परिवार सहित गया। होशियारपुर व पंजाब के कई अन्य नगरों से भक्त जन आंये हुये थे। अमेरिका से भी मोहन लाल खेतरपाल उनकी धर्मपत्नी हर्ष खेतरपाल व उनके दो बच्चे तथा मनोहर शर्मा, व उनका बेटा भी इस सत्संग में सम्मिलित हुये।

4 जून सन् 1999 ई० को सब भक्त समाज सद्गुरु जी के साथ 2 कैन्टरों व 7 कारों में रवाना हुये। सत्संग चण्डीगढ़, शिमला, सैंज तथा रिकांग पिओ में था।

जब सैंज में सद्गुरु जी सत्संग कर रहे थे तो एक नौ

जवान लड़का सद्गुरु जी के पास पहली बार आया। आते ही जोर-जोर से रोने लगा तथा काल-काल करने लगा। सद्गुरु जी के चरणों में जोर-जोर से अपना सिर पटकने लगा। साथ में सद्गुरु जी से जोर-जोर से क्षमा याचना मांगने लगा रोते-रोते लड़का बार-बार सद्गुरु जी के चरणों में लिपट जाता था। वह कह रहा था सद्गुरु जी मेरी काल से रक्षा करो। डरा-सहमा सा वह लड़का बार-बार सद्गुरु जी के चरणों से लिपट जाता था। काफी समय के पश्चात् वह शान्त हुआ। मैंने उस लड़के से पूछा कि आप को क्या नज़र आ रहा था जो आप काल-काल कह रहे थे। उसने मुझे बताया कि जब वह सद्गुरु जी के पास पहुंचा तो उसे अपना काल नज़र आने लगा और वह डर गया। सद्गुरु जी ने काल से उसकी रक्षा की।

सैंज से हम सब सद्गुरु जी के साथ रिकांग पिओ पहुंचे। यह चारों ओर पहाड़ियों से घिरा छोटा सा शहर है। यहां एक छोटा सा बाज़ार है। जब सद्गुरु जी वहां पहुंचे तो बहां के भक्तों ने सद्गुरु जी का बड़ा भव्य स्वागत किया। वहां के भक्तों ने सद्गुरु जी व गुरुमाता जी को फूलों से सज़ी एक जीप में बिठा

कर शोभायात्रा निकाली। मैंने पहले ऐसा भव्य स्वागत व भक्तों का उत्साह नहीं देखा था। बहुत से भक्तजन भक्ति में मस्त स्वागत यात्रा में झूम रहे थे। बड़ा आनन्दमय वातावरण था। यहां का सारा प्रबन्ध भक्त जुल्फी राम व वहां की चेअर महिला श्रीमती लक्ष्मी जी ने किया। यहां से रिब्बा गांव काफी दूर है शायद हिमाचल का अन्तिम गांव। वहां गर्मियों में भी काफी सर्दी होती है। वहां से भी काफी भक्तजन आये हुए थे। इस इलाके में आने जाने की अधिक सुविधा नहीं है। फिर भी लोग दूर-दूर से सत्संग में सम्मिलित हुये।

भक्त श्री जुल्फी राम जी ने मुझे बताया कि वैसे तो वह हमीरपुर का रहने वाले है। परन्तु कुछ वर्षों से रिकांग पिओ में बस गये। वह वहां कपड़े की दुकान करते हैं। उन्होंने बताया कि उन्हें कब्ज की बहुत शिकायत थी। कई इलाज किये परन्तु ठीक नहीं हुये। कब्ज की वज़ह से जुल्फी राम जी काफी परेशान रहते थे। उन्हें गैस की भी बहुत तकलीफ थी। किसी सज्जन ने उनको कहा यहां पुलिस में श्री भूपिन्द्र सिंह मेहता हैं जो योग सिखाते हैं। आप उनसे मिलें। जुल्फी राम जी अनमने

मन से भूपिन्द्र जी से मिले भूपिन्द्र जी ने उन्हें सुबह खाली पेट आने को कहा। सुबह जुल्फी राम जी ने अनमने मन से कुछ आसन किये। परन्तु उन को विश्वास नहीं हुआ कि मैं ठीक हो जाऊंगा। जुल्फी राम जी तीन बज़े उठ कर ही भूपिन्द्र जी के यहां देखने आ जाते कि ये लोग सुबह 4 बजे उठ कर क्या करते हैं ?

एक दिन भूपिन्द्र जी ने जुल्फी राम जी को कहा जून के महीने में सद्गुरु जी शिमला आ रहे हैं। आप भी मेरे साथ सद्गुरु जी के पास चलें। आप उन को अपनी सारी समस्या बतायें आप जरूर ठीक हो जायेंगे। हमारे सद्गुरु जी बहुत बड़े योगी हैं। भूपिन्द्र जी ने जुल्फी राम की परेशानी देख कर बार-बार आग्रह किया जुल्फी राम जी मान गये। जून 1994 को सद्गुरु जी शिमला पहुंचे। भूपिन्द्र जी के साथ जुल्फी राम जी भी सद्गुरु जी से मिले तथा अपनी बिमारी के बारे में बताया सद्गुरु जी ने कुछ क्रियाएं तथा आसन लिख कर दिये और कहा आप भूपिन्द्र जी से सीख लेना। अगले दिन सद्गुरु जी ने रोहड़ू के लिये जाना था तथा जुल्फी राम जी वापिस रिकांग

पिओ जाने लगे। भूपिन्द्र जी ने उन्हें कहा आप सुबह का प्रसाद ग्रहण कर के ही जाये। परन्तु जुल्फी राम जी ने कहा मैं कुछ खा नहीं पाऊंगा क्योंकि मेरा पेट पहले से ही आफ़रा हुआ है। दूसरा नाश्ता भी पूरी का है। भूपिन्द्र जी ने कहा जुल्फी जी आप इसे पूरी नहीं इसे प्रभु जी का प्रसाद समझ कर सेवन करें। बड़ी मुश्किल से जुल्फी जी पूरी खाने को तैयार हुये जुल्फी राम जी ने पेट भर कर पूरियां खाईं। जुल्फी राम जी जब अड्डे पर बस पकड़ने के लिये पहुंचे तो उन्हें शौच जाने की जरूरत महसूस हुई उसी समय जुल्फी जी पास के ही एक होटल में गये जहां उन्होंने एक कमरा बुक करवा लिया। जुल्फी राम जी बार-बार शौच गये। उन्होंने मुझे बताया उस दिन मेरा पेट एक दम साफ व हल्का हो गया तथा मैं अपने आप को काफी सुखद महसूस कर रहा था। उस दिन से मेरा विश्वास सद्गुरु जी के प्रति बढ़ने लगा। जुल्फी राम जी ने भूपेन्द्र जी से योग आसन सीखे तथा अपने स्थान पर सत्संग करवाया। जुल्फी राम जी का परिवार भी प्रभु भक्त हो गया। जुल्फी राम जी बताते हैं कि मैं बहुत ही संशय स्वभाव का व्यक्ति था। योग में मेरी रुचि नहीं थी। परन्तु

सद्गुरु जी से मिलने पर मुझे योग के प्रति रुचि हुई। आज जुल्फी राम जी रिकांग पिओ में लोगों को योग की शिक्षा देते हैं। सद्गुरु जी की ऐसी कृपा हुई कि जुल्फी राम जी का सारा परिवार प्रभु जी पर अटूट श्रद्धा रखता है। जुल्फी राम जी का छोटा सा लड़का जो 7-8 वर्ष का है। उसे योग वन्दना प्रभु जी की आरती तथा भविष्य वाणी और रामकहानी कण्ठस्थ है। जब जुल्फी राम जी के घर लोग योग आसन सीखने आते हैं तो यह बच्चा हर समय उन की सेवा करता है। यह सब सद्गुरु जी की अपार कृपा से हुआ।

रिकांग पिओ के सत्संग के पश्चात् वापसी पर फिर सद्गुरु जी के साथ हम सब रात्री सैंज रुके। क्योंकि रास्ता बहुत लम्बा था। अगले दिन शिमला सत्संग के पश्चात् होशियारपुर आश्रम पहुंचे।

✧✧✧✧✧✧✧

कैसट

शुरु-शुरु में जब मैं सद्गुरु जी के पास आया तो देखा, सद्गुरु जी अपने प्रवचनों की कैसेट की कापी (रिकार्डिंग) कर रहे थे। सद्गुरु जी ने मुझे बताया कि बहुत से भक्त प्रवचनों की कैसेट मांगते हैं तो मैं उनको कापी करके दे देता हूँ। लगभग सप्ताह में सद्गुरु जी कई बार कैसेट की कापी करते थे। मैंने सद्गुरु जी से बेनती की कि यदि आप की आज्ञा हो तो मैं प्रवचनों की कैसेट जालन्धर से कापी करवा कर भक्तों को दूँ। वहां एक बार में काफी कापी हो जाती है और एक रुपया कापी करने का लगता है। सद्गुरु जी ने कहा भक्तों का काम इस तरह चल रहा है। अभी इस काम की आवश्कता नहीं है। मैंने फिर बेनती की सद्गुरु जी जो भक्त दूर-दूर से आते हैं उनको तो रविवार के सत्संग के प्रवचनों का पता ही नहीं है। इस लिये यदि दूसरे भक्तो को भी आप के प्रवचनों की आवश्यकता होगी तो वो भी आप की ज्ञानमयी अमृत वाणी सुन लेंगे। परन्तु सद्गुरु जी ने आज्ञा नहीं दी।

एक दिन मुझे एक आरती की कैसेट सुनने का अवसर मिला। जिसमें आरती का महत्व व शास्त्रों में धूप, अगरबत्ती,

घी आदि सामग्री का महत्व भी बताया था। मैंने कैसेट बनवाने की बात की परन्तु सद्गुरु जी ने डांटते हुये मना कर दिया और कहने लगे मैं चाहता हूँ कि तू अर्न्तमुखी हो परन्तु तू बाहर मुखी होता जा रहा है।

शाम को जब मैं सद्गुरु जी के साथ सैर करने गया तो मैंने सद्गुरु जी से डरते-डरते फिर बेनती की कि सद्गुरु जी पहले पहल प्रचार करने के साधन बहुत कम थे आज किसी भी प्रकार का प्रचार टी.वी., आडियो कैसेट तथा वीडियो कैसट के माध्यम से अधिक हो रहा है। यह प्रचार का माध्यम आसान तथा शीघ्र प्रचार करने वाला साधन है। जब स्वामी मुलखराज जी होशियारपुर आश्रम आते थे तो आप पोस्टरों को छपवा कर बांटते थे तथा दिवारों पर चिपकाते थे। लाऊड़ स्पीकर से योग प्रचार करते थे। उस समय प्रचार के यही साधन थे। परन्तु आज प्रचार साधनों में परिवर्तन आ गया है। कैसेट बनवाने से प्रभु जी के योग प्रचार तथा उनके बारे में लोगों को अधिक जानकारी मिलेगी। आप का उदेश्य तो अधिक से अधिक प्रभु जी की विद्या का प्रचार करना है। स्वामी मुलखराज जी भी भजनों द्वारा सत्संग किया करते थे। फिर स्वामी जी के भजनों की पुस्तक भी

छपी है। यदि उन के भजनों की आडियो कैसेट बन जाये तो अधिक अच्छा है।

सद्गुरु जी, रही बात मेरी अर्न्तमुखी होने की, जिस दिन आप की कृपा हो गई उस दिन मुझे अर्न्तमुखी होने से कोई नहीं रोक सकता। ब्रह्मा भी नहीं। यह सब सुनकर सद्गुरु जी मुस्कुरा दिये। फिर कुछ सोच कर सद्गुरु जी ने मुझे कहा ये काम मुश्किल है। मैंने फिर बेनती की कि सद्गुरु जी आप का आशीर्वाद मेरे साथ है तो कोई काम असम्भव नहीं है। बस मुझे तो आप की आज्ञा चाहिये। तब सद्गुरु जी ने आडियो कैसेट बनवाने की आज्ञा दे दी।

प्रभु जी के भजनों व आरती की कैसेट बनवाने में मेरी सहायता मेरी धर्म पत्नी रीना मेहता, कुमारी सुमति, सोमनाथ जी, सोमनाथ जी की धर्म पत्नी निशा जी, मदन लाल आदि भक्तों ने की। कुछ भजन कैसेटें बाहर के गायकों से भी बनवाईं। आज सद्गुरु जी की कृपा से केवल प्रभु जी की आरती की ओडियो कैसेट लगभग 5000 से भी अधिक प्रभु भक्तों के पास है। जो प्रभु भक्ति का रसमयी लाभ उठा रहे हैं। ये सब कुछ सद्गुरु जी के आशीर्वाद से सम्भव हुआ।

सवाई ग्राम (एत्मादपुर)

सन् 1994 ई० की बात है मेरी ईच्छा प्रभु जी की सिद्ध गुफा सवाई ग्राम के दर्शन करने की हुई। मैंने सद्गुरु जी से अपनी इच्छा बताई तो सद्गुरु जी ने कहा ठीक है। जब सवाईं ग्राम जाओगे तो रामायण का पांचवें खण्ड (विनय काण्ड) की दो प्रतियां साथ ले जाना। एक सवाईं आश्रम तथा एक टाट बाबा के आश्रम फिरोजाबाद में दे देना।

मैं 12 जुलाई सन् 1994 ई० को अपने साथ मास्टर श्री शंकर दास जी जो साधु आश्रम होशियारपुर में कार्यरत हैं, को साथ ले गया। मैं आगरा होता हुआ सवाईं ग्राम प्रभु जी के आश्रम पहुंचा। मैंने वहां के प्रबन्धक जी को रामायण की विनय काण्ड की प्रति दी जो उन्होंने सद्गुरु जी के धन्यवाद सहित स्वीकार की। मैंने उन से प्रभु जी की सिद्ध गुफा के दर्शन करने की इच्छा जताई। मैं सिद्ध गुफा के अभी बाहर खड़ा था तो मेरी प्राण नाड़ियों में तेजी से कम्पन्न पैदा होने लगी। उसी अवस्था में मैंने प्रभु जी की पावन मिट्टी के दर्शन किये और अपने माथे पर लगायी। तभी मेरी भस्त्रिका बहुत तेज चलने लगी जो लगभग 4-5 मिनट चली। इससे मुझे बड़ा आनन्द

महसूस हुआ। सद्गुरु जी की कृपा से मेरी पहली बार भस्त्रिका चली।

सवाईं ग्राम आश्रम में मेरी मुलाकात मास्टर नत्थू राम जी से हुई जो गांव उल्दापुर पोस्ट आफिस पिलखतरा जिला एटा के रहने वाले हैं। मास्टर जी बड़े प्रभु भक्त हैं। वह मेरे साथ टाट बाबा के आश्रम फिरोजाबाद गये। रास्ते में उन्होंने मुझे अपने जीवन की एक घटना बताई। जिस गांव में वह रहते हैं। उस इलाके का एक माना हुआ डकैत एक रात को दिवार फांद कर मास्टर जी के घर चोरी करने के लिये आया। जब डकैत घर में घुसा तो प्रभु जी ने स्वंय चिमटे से डकैतों को बहुत मारा जिस से वह वहां से भाग गये। मास्टर जी को तथा उनके परिवार वालों को डकैतों के आने का कुछ पता नहीं चला। अगले दिन सुबह वह डकैत घर आया और पूछने लगा तुम्हारे घर में चिमटे वाला बाबा कहां है। मास्टर जी ने डरते हुये उसे कहा यहां पर तो कोई चिमटे वाला बाबा नहीं रहता। उस डकैत ने कहा हम रात को यहां डाका डालने आये थे परन्तु एक बाबे ने हमें चिमटों से बहुत मारा। डकैत इधर-उधर हमारे घर में बाबा को देखने लगे तभी उन की नज़र प्रभु जी के चित्र पर पड़ी उस ने कहा यही तो है रात वाले बाबा, कहां है ? मास्टर जी ने नम्रता

ने डकैत को कहा ये तो हमारे भगवान हैं। इन का नाम योगेश्वर प्रभु राम लाल जी है। जिन का शरीर शान्त हो चुका है। प्रभु जी ने सूक्ष्म रूप में आप को दडिंत किया है। डकैत को अब समझते देर नहीं लगी। उस ने प्रभु जी को प्रणाम किया तथा उस दिन से डकैती का काम छोड दिया। कभी-कभी प्रभु जी को अपने जीवों को सन्मार्ग पर लाने के लिये क्या-क्या चमत्कार करने पड़ते हैं।

मास्टर नत्थू राम जी ने मुझे अपने जीवन काल की एक और प्रभु जी की चमत्कारी घटना बताई। उन का अपने चचेरे भाई से जमीन का मुकदमा हाई कोर्ट लखनऊ में चल रहा था। जिस दिन फैसला होना था उस दिन मास्टर जी बहुत चिंतित थे और उनके वकील ने कहा लगता है फैसला हमारे हक में होने की कम ही उम्मीद है। वकील कुछ समय पश्चात् कोर्ट में चला गया। मास्टर जी वकील साहिब के कैबिन में ही बैठे रहे तथा यह सोचने लगे कि यदि हम मुकदमा हार जायेंगे तो हमारी जमीन हाथ से निकल जायेंगी। यह सोच कर मास्टर जी की आँखों में आंसू आ गये। तभी मास्टर जी को पीछे से किसी ने झंझोड़ा, मुड़कर देखा तो प्रभु जी थे। उन्होंने कहा सब ठीक हो जायेगा। तू मुकदमा जीत जायेगा। तभी वकील की आवाज

सुनाई दी मास्टर जी बधाई हो आप मुकदमा जीत गये हैं। मास्टर जी के खुशी से आंसू आ गये।

मैंने मास्टर नत्थू राम जी से कहा आप पर प्रभु जी की इतनी कृपा है तो आप प्रभु जी की श्री योग महा दिव्य रामायण का पाठ क्यों नहीं करते। यदि आप के पास रामायण नहीं है तो मैं होशियारपुर आश्रम से भेज दूंगा। फिर हम फिरोजाबाद आश्रम पहुंचे। वहां के प्रबन्धक को ''विनय काण्ड'' की प्रति दी। उन्होंने सद्गुरु जी श्री चमन लाल जी की भरपूर प्रशंसा की। उन्होंने हमारी काफी सेवा की।

जब मैं होशियारपुर आश्रम पहुंचा तो मैंने सद्गुरु ज़ी को मास्टर नत्थू राम जी की बात बताई और मास्टर जी को रामायण भेजने की बेनती की। सद्गुरु जी की आज्ञा से मास्टर जी को श्री योग महा दिव्य रामायण की प्रतियां भेजी। कुछ समय बाद मास्टर नत्थू राम जी का मुझे पत्र आया कि जिस घर में प्रभु जी की रामायण का पाठ करते हैं वहां चमत्कार हो जाता है। उस के पश्चात् होशियारपुर आश्रम से बहुत से भक्तों ने श्री योग महा दिव्य रामायण की प्रतियां मंगवाईं। सद्गुरु जी की कृपा से भक्त जन रामायण पढ़ कर प्रभु जी की भक्ति का रस मान रहे हैं।

प्रभु चित्र की कृपा

मैंने सन् 1998 ई० में अपना मकान शिफ्ट किया। मकान मालिक ईंग्लैंड रहते थे। परन्तु वह दो महीने बाद भारत आते और इसी मकान के नीचे वाले भाग में रहते। जब भी वह लोग यहां आते मदिरा व मांस का खूब सेवन करते । इस से मुझे तकलीफ होती। मैं यहां से मकान शिफ्ट करने की सोचने लगा। मुझे प्रभु जी की कृपा से लगभग एक वर्ष बाद दूसरा मकान मिला। जब मैंने मकान बदला तो मैंने वहां प्रभु जी के आसनों वाला कलैण्डर छोड़ दिया और अपनी पत्नी को कहा प्रभु जी का यह चित्र यही टंगा रहने दो। परन्तु मेरी पत्नी ने कहा इन शराबियों के लिये यहां प्रभु जी का चित्र मत छोडो। मैंने कहा सद्गुरु जी कहते हैं, जिस स्थान पर प्रभु जी का चित्र स्थापित है प्रभु जी वहां कभी ना कभी जरूर चमत्कार करते हैं। मैं चाहता था कि यह परविार शराब का सेवन छोड़ दे। क्योंकि यह परिवार भगवान में श्रद्धा भी बहुत रखता है। यही सोच कर मैंने प्रभु जी का एक चित्र वही रहने दिया।

कुछ महीनों के पश्चात् मुझे पता चला कि इनके बड़े बेटे ने शराब व मांस का सेवन छोड़ दिया है। यह लड़का सब से

अधिक शराब पीता था। प्रभु जी की कृपा से यहां भी चमत्कार हुआ और सद्गुरु जी का कथन सत्य हुआ। ये बात सत्य है कि जहां पर प्रभु जी का चित्र स्थापित होगा वहां कभी ना कभी प्रभु जी जरूर कृपा करते हैं। गुरुमाता जी अक्सर कहती थी कि जहां पर प्रभु जी का चित्र है वह स्थान हमारे लिये तीर्थ है। ऋषि काक भुषुंडि की वाणी भी सत्य है कि प्रभु जी कल्पान्त तक संसार में जीवों की रक्षा करेंगे।

सद्गुरु जी की चेतावनी

सन् 1998 की बात है सद्गुरु जी ने मेरी धर्म पत्नी को कहा कि तुम किट्टी पार्टी चोड़ दो। परन्तु मेरी पत्नी ने कहा अभी एक वर्ष तक यह किट्टी पार्टी खत्म नहीं होगी। मैंने पत्नी से कहा कोई बात नहीं आप किट्टी पार्टी के पैसे भेज दिया करो परन्तु वहां मत जाओ। परन्तु उसने जाना बन्द नहीं किया। जून 1998 में जब वह घर से किट्टी पार्टी के लिये निकली ही थी तो मेरी पत्नी की एक वैन से दुर्घटना हो गई। मेरी पत्नी को सर पर चोट आई तथा कालर बोन भी टूट गई। जिस कारण वह छः महीने तक तकलीफ में रही। इस दुर्घटना से एक सप्ताह बाद मेरी भी कार दुर्घटना ग्रस्त हो गई परन्तु मैं बाल-बाल बच गया। इस के अगले सप्ताह मेरे बेटे व बेटी की भी कार से दुर्घटना हो गई। परन्तु प्रभु जी की कृपा से वह भी बच गये।

उस वर्ष सद्गुरु जी योग प्रचार के लिये हमीरपुर जाने वाले थे परन्तु पत्नी ठीक ना होने के कारण मैं सद्गुरु जी के साथ नहीं जा सका परन्तु मैंने अपनी कार ड्राईवर को देकर सद्गुरु जी के साथ भेज दी।

भक्त सोम नाथ ने सद्गुरु जी से मेरे ना आने का कारण पूछा तो सद्गुरु जी ने मेरी पत्नी की दुर्घटना की बात बताई और साथ यह भी बताया कि मेहता जी के घर में एक मौत होनी लिखी थी परन्तु प्रभु जी ने सब को थोड़ा-थोड़ा दुःख दे कर मौत टाल दी। जिस पर सद्गुरु जी की कृपा का हाथ हो सद्गुरु जी उन्हें दुःखों से बचा लेते हैं। सद्गुरु जी की महिमा अपरम-पार है।

प्रभु भक्तों के संग सदा रहते हैं

फरवरी सन् 1998 ई. को मैं जयपुर परिवार सहित प्रभु जी की संगमरमर की मूर्ति लेने अपनी सूमो में जा रहा था। उस समय दिल्ली जयपुर मार्ग चार सड़का बन रहा था। रास्ते में कई जगहों पर ट्रैफिक का जाम लगा था। मैं अपनी सूमो में आगे वाली सीट पर बैठा था। मेरे साथ वाली सीट खाली थी। ट्रैफिक जाम होने के कारण हम से एक व्यक्ति ने लिफ्ट मांगी उस की अपनी कार आगे निकल गई थी। जैसे ही उस व्यक्ति को गाड़ी की अगली सीट पर बिठाया तो पीछे बैठी मेरी धर्म पत्नी ने देखा कि इस सीट से प्रभु जी उठे और गाड़ी में लगे प्रभु जी के चित्र में समा गये। यह देखकर पत्नी को हैरानी हुई। यह सोचने लगी यदि इस व्यक्ति को लिफ्ट ना देते तो प्रभु जी हमारे साथ सूक्ष्म रूप में रहते। सद्गुरु जी ने एक बार सत्संग में अपने प्रवचनों में कहा कि यदि हम प्रभु जी का कोई भी कार्य करने जाते हैं तो प्रभु जी सदैव हमारे साथ रहते हैं। आज प्रत्यक्ष रूप से सद्गुरु जी ने दिखा दिया। हमारा सफर बड़ा सुख पूर्वक रहा।

सेवा

एक बार मैंने सद्गुरु जी से कहा कि हनुमाम जी प्रभु रामचन्द्र जी के अनन्य भक्त ज्ञानवान तथा सबसे उत्तम सेवक हैं। कृपा करके हमें भी आश्रम की ऐसी सेवा बख्शें। ताकि हमारा भी जीवन सफल हो सके। सद्गुरु जी मुस्कुराते हुये बोले हनुमान जी प्रभु जी के साथ सृष्टि में कई बार जन कल्याण के लिये आये। परन्तु बहुत से ऐसे भक्त भी संसार में आये जिन्होंने हनुमान जी से भी बढ़ कर प्रभु जी की सेवा की परन्तु जग जाहिर नहीं हुये। हमें प्रभु जी बहुत कुछ देने आये हैं। हमें केवल प्रभु जी अपने चरणों में वास दें। मैं सोचने लगा कि शायद मैंने सद्गुरु जी से कम मांग लिया है, प्रभु जी तो हमें बहुत अधिक देने आये हैं। मैं सद्गुरु जी को कई बार बेनती करता कि मुझे आश्रम की बहुत सेवा बख्शें परन्तु सद्गुरु जी मुस्कुरा देते। एक दिन मेरा यह संशय दूर करने के लिये सद्गुरु जी ने मुझे स्वपन में दिखाया कि एक विशाल मेला लगा हुआ है। मैं मेले में घूम रहा हूँ तभी मुझे सामने से प्रभु योगेश्वर राम लाल जी स्वामी मुलखराज जी के संग मिले। मैंने प्रभु जी को प्रणाम किया। प्रभु जी ने सूट, टाई पहन रखी थी। प्रभु जी ने कहा चलो मेला देखते हैं। मैं बड़ी उत्सुकता से प्रभु जी को मेले

की वस्तुएं दिखाता और कहता प्रभु जी आप के लिये ये वस्तु ले लूँ। ऐसा करते हुये हम मेले में एक स्थान से गुजरे तो देखा, एक सुन्दर सा बन्दर लोगों से हाथ मिला रहा है और अंग्रेजी में बातें भी कर रहा है। यह देख कर मैंने प्रभु जी से कहा प्रभु जी देखिये बन्दर अंग्रेजी बोल रहा है। प्रभु जी ने मुझे कहा जा कर तू भी मिल ले जब मैं बन्दर से मिला तो उसने मुझ से भी हाथ मिलाया। मैंने प्रभु जी से प्रार्थना की कि प्रभु जी इस बन्दर को मुक्ति दे दो। प्रभु जी ने कहा अभी इस की मुक्ति का समय नहीं आया। इस बन्दर को तू अपने पास रख ले। यह सुन कर मेले में कई लोगों ने बन्दर को कहा तू हम से लाखों रुपये ले ले और हमारे साथ चल। परन्तु बन्दर ने कहा नहीं, मुझे प्रभु जी का आदेश हुआ है मैं मेहता जी के पास ही रहूँगा। इस के पश्चात् बन्दर ने मुझे कहा आज से मैं आप के साथ ही रहूँगा। इतने में मेरी नींद खुल गई।

यह सब दृश्य देखने के पश्चात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि कलियुग में प्रभु राम लाल जी अनन्त शक्तियों के साथ प्रकट हुये हैं। सद्गुरु जी का कथन सत्य है कि प्रभु योगेश्वर राम जी हम सब जीवों को बहुत कुछ देने आये हैं। हम सब उन के चरणों में रहें ताकि हमारा लोक परलोक सुखमय हो।

✧✧✧✧✧✧✧

बारह सुधार

1. सती प्रथा तथा दहेज प्रथा पाप है।
2. बाल व रात्री विवाह का परित्याग करें।
3. हिन्दू जाति एक ज्ञान का महासागर है। इसे अपनी भाषा, वेद व संस्कृति नहीं भूलनी चाहिये।
4. छुआछूत सामाजिक अपराध है और धार्मिक दृष्टि से पाप है। छुआछूत देश व जाति को पतन की ओर ले जाता है।
5. शराब पीने से हिन्दू समाज मानसिक व शारीरिक रूप से दुर्बल हो गया है जिस कारण धार्मिक आचरण से भी दूर होता जा रहा है। शराब का त्याग करें।
6. "सफाई खुदाई है" यह सत्य है। मन्दिरों की सफाई रखना जरूरी है।
7. हिन्दू धर्म में सद्गुरु का विशिष्ठ स्थान है। इसलिये सद्गुरु समाज का मार्ग दर्शक करें।
8. भिक्षा वृत्ति पाप है।
9. नास्तिकता पाप का मार्ग है। ईश्वर के नियमों का पालन न करना नास्तिकता है।
10. धर्म ग्रंथों का स्वाध्यय करना चाहिये। धर्म ग्रंथों के अनुशीलन के बिना मनुष्य अज्ञानी रहता है।
11. संगठन (एकता) में शक्ति है। इसलिये हिन्दू समाज को एकता रखनी चाहीए।
12. घर, गलियां, गांव, शहर आदि को साफ रखें ताकि रोगों से बचा जा सके।